प्रथम अध्याय

शोध परिचय

1.1 प्रस्तावना :–

अध्ययन के धरातल में जितनी प्रशंसा अध्यापक की हुई है उतनी किसी की भी नहीं हुई थी। वैदिक ऋषियों ने अध्यापक को छात्र का मानक पिता कहा है। पूर्व और पश्चिम के देशों में भी इसका आदर किया गया हैं प्राचीन भारत में उसे प्रभु के समकक्ष 'गुरूब्रह्म' स्थान दिया गया है। गुरू और ईश्वर अगर साथ मिल जाये तो गुरू का प्रथम महत्व देना निम्नलिखित कबीर के शब्दों में निहित है।

''गुरू गोविन्द दोऊ, खड़े, काके लागू पांय,''।
''बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय''।।

पश्चिम में अध्यापक को ''राष्ट्र का उन्नायक'' संस्कृति का पोषक, मानव का कर्ता, इतिहास का निर्माता आदि माना गया है। अध्यापक वह माली है जो भाँति–भाँति के पौधों के समान बालकों को पोषण करके उनके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास को बल से आपूरित करता है। अध्यापक को शिक्षा के क्षेत्र में महान स्तम्भ रूप में स्वीकार किया गया है। अध्यापक का पद अत्यन्त महत्वपूर्ण है अतः यह निष्कर्ष मिलता है कि हर अध्यापक योग्य व्यक्ति हो। यह भी आवश्यक है कि जो व्यक्ति अध्यापक व्यवसाय में कार्यरत है वे मानसिक रूप से स्वस्थ रहे जिससे कि वे अपने कार्य का निष्पादन भली प्रकार से कर सके। यदि वे विभिन्न कारणों से कुण्ठित नहीं रहेंगे तो सीधा असर विद्यार्थियों और परोक्ष रूप से समाज पर पड़ेगा।

अध्यापक की परिभाषा –

हमायूँ कबीर– ''अध्यापक वास्तविक रूप में राष्ट्र के सौभाग्य का निर्माता है।''

माध्यमिक शिक्षा आयोग –

''प्रत्येक अध्यापक और अनुभवी शिक्षा इस बात से परिचित है कि शिक्षा क्रम तथा पाठ्यक्रम उस समय तक निर्जीव रहते है जब तक कि अध्यापक शिक्षा पद्धति के उचित ढ़ग को जीवन में परिचालित करके अपनाते नहीं है।

टिण्डल –

स्कूल अध्यापक का व्यवसाय ही महान उच्चता का है स्वार्थपरता, अपूर्णता, विद्वेष, नैतिक पतन तथा चालाकी के दुग्रुणों से मुक्ति दिलाने वाला यदि कोई है तो वह स्कूल अध्यापक है जो अपनी सच्चाई और प्रतिष्ठा द्वारा उचित गुणों की व्याप्ति का संचालक बन जाता है।

एच.डी. वेल्स– ''अध्यापक इतिहास का वास्तविक निर्माता है''।

चीनी कहावत– ''एक वर्ष की योजना के लिए अनाज उगाओ एक दशक की योजना के लिए वृक्ष लगाओं, सदियों की योजना के लिए मानव का निर्माण करो''

ऋषि मुनि – माता की सेवा करने से बालक संसार को प्राप्त करता है। पिता की सेवा से वह संसार में जन्म लेता है और गुरू की सेवा करने से उसे ब्रह्म की उपाधि होती है।''

के.जी. सैयदन– ''यदि आप किसी देश की जनता को नापना चाहते है कि किसी समाज विशेष में किन मूल्यों को मान्यता दी जाती है तो इसका अच्छा तरीका यह है कि आप मालूम करें कि उस समाज में अध्यापकों का सामाजिक पद क्या है और कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है।''

अध्यापक का दायित्व :–

आधुनिक शिक्षा में अध्यापक अधिक महत्वपूर्ण तथा पहले से अधिक उतरदायित्व पूर्ण हो गया है। आज समाज उनसे नवीन आशाएं रखने लगा है। अध्यापक की प्राचीन मान्यता समाप्त हो रही है और अध्यापक के समस्त नवीन आदर्शो की स्थापना समाप्त हो रही है। अब अध्यापक का केवल माली, केवल कुम्हार, केवल कारीगर ही होना पर्याप्त नहीं है। वह उसमें बहुत ऊंचा उठ चुका है। अब उसके लिये क्रियाशील दार्शनिक बनना भी आवश्यक हो गया हैं।

बालकों के विकास के लिये समुचित वातावरण की आवश्यकता है। इस वातावरण का सृजन, अध्यापक का दायितत्व है। केवल वातावरण उपस्थित कर देना ही पर्याप्त नहीं अपितु संघीय विकास के लिये समुचित निर्देशन एवं पथ प्रदर्शन की भी आवश्यकता होती है जो कि अध्यापक का ही उसकी साधना पूर्णतया सम्पन्न हुई हैं।

माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों के कर्त्तव्य तथा उत्तरदायित्व :–

विद्यालय की उन्नती एवं अवनति, सफलता एवं असफलता का आधार अध्यापकों की ही कार्य क्षमता एवं प्रभावशाली ढंग से उसके कार्य एवं उसकी उत्तरदायित्व का निर्वाह पर ही निर्भर है। वह अपने चरित्र, कर्तव्य, निष्ठा एवं व्यक्तित्व तथा व्यवहार से न केवल छात्रों वरन् अभिभावकों एवं गलत शिक्षा देकर सम्पूर्ण समाज की हत्या करता है। तथा सम्पूर्ण समाज का अहित करता है। शिक्षक अपने समुचित शिक्षण से ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करते है जो राष्ट्र की प्रगति के आधार होते हैं।

संस्कृति का पोषक :–

शिक्षक संस्कृति पोषक परिमार्जक एवं रक्षक है। शिक्षक के माध्यम से ही संस्कृति पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती है। समाज की परम्पराएँ नवयुवकों की बात होती है।
शिक्षक बालक के शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक व नैतिक विकास में बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। एक अध्यापक के प्रभाव का कहां अंत होगा, कहा नहीं जा सकता क्योंकि वह अपने छात्रों पर अपने प्रभावों की अमिट छाप छोड़ देता है। एक सच्चा अध्यापक जीवन पर्यनत विद्यार्थी बना रहता है। **रविन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में –''एक अध्यापक कभी भी वास्तविक अर्थो में नहीं पढा सकता जब तक वह स्वंय अभी सीख न रहा हो।** एक दीपक कभी भी दूसरे दीपक को तब तक प्रज्वलित नहीं कर सकता जब तक कि उसकी अपनी ज्योति जलती न रहें।

अध्यापक का बालकों पर पड़ने वाला प्रभाव :–

बाह्य आकर्षण :–

अध्यापक के बाह्य आकर्षण का प्रभाव केवल सम्पर्क में आने वाले जन समूह पर ही नहीं पड़ता अपितु उन छात्रों पर भी पड़ता है जिन्हें वह पढ़ाता है। अच्छे व्यक्तित्व वाले अध्यापक के प्रति छात्र खुद व खुद प्रथम बार में ही श्रद्धालु बन जाते है। इसी आधार पर **फ्रायड ने कहा है कि अध्यापिकाएं बालकों को अधिक आकर्षित करती हैं।**

बौद्धिक विशेषता :–

के.जी.सैर्यदन के शब्दों में– किसी पात्र से तब तक कोई वस्तु बाहर नही आती जब तक कि वह वस्तु उसमें डाली न गई हो।

आर्थिक स्तर :–

बुद्धिजीवी होते हुये भी अध्यापक को उसके कार्यो के बदले मे बहुत कम पारिश्रमिक मिलता और निजी संस्थाओं के अध्यापकों की वो कीमत पूछो। उन अध्यपकों के परिश्रमिक से अधिक तो उनसे परिश्रम करवाया जाता है।

दूसरे शब्दों में कहा जाये जो उनका भरपूर शोषण किया जाता है। इनके लिये न तो भविष्य निधिकुण्ड की ही व्यवस्था है और न ही चिकित्सा भत्ते की। यहां तक कि उनसे वेतन रजिस्टर पर लिखवाया कुछ जाता है और दिया कुछ जाता है। यह अन्याय नहीं तो और क्या है।

व्यावहारिक स्तर :–

आज का अध्यापक जब कुछ वर्षो के सेवाकाल में इस वास्तविकता से परिचित हो जाता है कि अध्यापक व्यवसाय में किसी भी प्रकार की भावी प्रगति की संभावना नहीं है तो वह भी इसी व्यवसाय के प्रति उदासीन हो जाता है। जो अध्यापक जीवनभर मानसिक कार्य करता है। एक सप्ताह में तीस या चालीस कार्य करता है तो उसे कुण्ठा या भग्नाशा होना स्वाभाविक हैं।

इस व्यवसाय स्तर की दृष्टि से यह स्पष्ट है कि आज अध्यापक ने अपनी व्यावसायिक दक्षता का खो दिया है। जिसके कारण अध्यापक का वह सम्मान नहीं हो रहा जो कि पहले था। जिससे अध्यापक कुण्ठा ग्रस्त हैं।

कुण्ठा का स्वरूप :–

मनोवैज्ञानिक गार्डनर मार्फी के अनुसार :–''जब कोई व्यक्ति कोई लक्ष्य लेकर चलता है और वह उस लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाता है तो उसमें कुण्ठा उत्पन्न होने लगती है जब व्यक्ति मे कुण्ठा उत्पन्न होती है तो वह मानसिक तनाव अनुभव करता है और मानसिक तनाव का प्रभाव ऐसे व्यक्तित्व पर भी पड़ता है। कुण्ठा एक आवेश की स्थिति है जिसमें व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है किन्तु उसके मार्ग में समस्याओं के कारण लक्ष्य को प्राप्ति में कुछ अवरोध आ जाने के कारण स्वंय को कोसता है।

उदाहरणार्थ :–

जब जब अध्यापक विद्यालय में शैक्षिक प्रक्रिया का क्रमबद्ध रूप में चलाना चाहता है लेकिन स्थानीय नेताओं और सरपंच द्वारा हस्तक्षेप करने के कारण यह विद्यालय की शैक्षिक प्रक्रिया ठीक से कार्यरत न होने के कारण कुण्ठित हो जाता हैं।

सभी व्यक्तियों में सामान्यतया स्वभावश आगे बढ़ने और कुछ न कुछ पाने की तमन्ना रहती है। बहुत सी महत्वकांक्षाओ से वे घिरे रहते है। अपनी इच्छाओं और चाहतों को पूरा करने के लिए पूरी तरह सघंर्ष भी करते है। परन्तु अच्छी से अच्छी योजना बनाकरक कार्यपथ पर पूरे जारे–शोर से आगे बढ़ने पर कभी–कभी जैसा सोचा जाता है वैसी संतोषजनक उपलब्धि उन्हें नहीं मिल पाती।

कभी ऐसी भी स्थितियों से उन्हें गुजरना पड़ता है कि जैसे कि उन्हें अपनी प्रगति की राह में अंधेरा ही अंधेरा ही नजर आता है और आशा की कोई किरण नजर नहीं आती। ऊपर से अपने प्रयत्नों में लगातार मिलने वाली विफलता उन्हे उस स्थिति या हालात में लाकर खड़े कर देती है जिसे मनोविज्ञान की भाषा में नैराश्य तथा कुण्ठा की स्थिति से संबोधित

किया जाता है। कुण्ठा से जुड़ी हुई यह स्थिति कैसी होती है इसे स्पष्ट करने के लिए हम अध्ययन करेगे।

कुण्ठा का अर्थ :–

जैम्स सी. को. लैमन के अनुसार जब हमारे अभिप्रेरको के मार्ग में किसी ऐसी रूकावट के कारण बाधा उत्पन्न होती है। जिसके फलस्वरूप वांछित लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती तब कुण्ठा उत्पन्न होती है। प्रेत्यक व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताएँ तथा आंकाक्षएँ होती है। व्यक्ति उच्च स्तर का जीवन बिताने के लिऐ दिन–प्रतिदिन नये–नये लक्ष्यों का निर्माण करता है। जब इन लक्ष्यों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधा उत्पन्न हो तो कुण्ठा कहलाती है। कुण्ठा वह स्थिति है जो लक्ष्यों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के फलस्वरूप उन्पन्न होती हैं।

मनोवैज्ञानिक गार्डनर मार्फी ने कुण्ठा के बारे में लिखा है कि कुण्ठा वस्तुतः लक्ष्य प्राप्ति में बाधा है।

डी.वी. क्लार्डन के शब्दों में :–

''प्रयास की पूर्ति में बाधाएं कुण्ठा उत्पन्न करती है।''

मनोवैज्ञानिक डबल्यू. आर. मैक के अनुसारः–

''व्यक्ति को प्रभावित करने वाले कारणों में कुण्ठा महत्वपूर्ण है।''

कुण्ठा की परिभाषाओं से निम्न महत्वपूर्ण तथ्य हमारे सामने आते हैः–

(1) कुण्ठा वास्तव में मनोशारीरिक दशा है।

(2) यह दशा व्यवहार में कोई बाधा उपस्थित होने से उत्पन्न होती है।

(3) कुण्ठा के कारण व्यक्ति का व्यवहार सामन्य स्थिति से भिन्न होता है।

कुण्ठा के प्रकार :–

व्यक्ति सदैव वातावरण से प्रभावित होता है। यदि वातावरण व्यक्ति के अनुकूल है तो व्यक्ति समायोजन कर लेगा अन्यथा समायोजन अच्छा नहीं होगा। वातावरण के अभाव में व्यक्ति मन में कुण्ठा उत्पन्न होती है।

1. आन्तरिक कुण्ठा :–

आन्तरिक कुण्ठा उस बाधा का परिणाम होती है जो स्वयं व्यक्ति में होती है।
उदाहरणार्थ – भय, जो व्यक्ति अथवा लक्ष्य प्राप्त करने में रोकता है या शारीरिक मानसिक अथवा संवेगात्मक अभाव की स्थिति।

2. बाह्य कुण्ठा :–

उन परिस्थितियो का परिणाम होती है जिसमे कोई बाह्य बाधा व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करने से रोकती है। उदाहरणार्थ – भौतिक बाधाओं, नियमों कानूनों या दूसरों के अधिकारों या इच्छाओं का परिणाम बाह्य कुण्ठा हो सकती है।

कुण्ठा एक प्रक्रिया में रूकावट समझी जाती है। एक व्यक्ति को कुण्ठा से पीड़ित है। एक कार्य करनें में पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता। इस प्रकार यह विचार किया जाता है कि कुण्ठा क्रिया में रूकावट डालती है और इस तरह सीखने की गति में कमी आ जाती है, किन्तु यह विचार पूर्णतः सत्य नहीं है वास्तव में कुण्ठा सीखनें में रूकावट भी डाल सकती है और इसको प्रेरित भी कर सकती है। बुश्लेस्की के अनुसार अवधान सीखने में एक प्राथमिक तत्व है। अवधान के लिए मूल वस्तु कुण्ठा है। बुग्लेस्की का विचार है कि शिक्षक का कार्य आवश्यक सीमा तक कुण्ठा उत्पन्न करता है। यह एक कठिन प्रश्न है कि कितनी दुःश्चिता उत्पन्न की जाय क्योंकि यदि यह दुःश्चिता बहुत अधिक है तो यह सीखने की स्थिति से बचने को प्रोत्साहित करेगी और यदि बहुत कम है तो अवधान में कमी आयेगी। बुग्लेस्की का कथन है कि जब विद्यार्थी की जिज्ञासा जाग्रत की जाती है तो कुण्ठा उत्पन्न हो जाती है क्योंकि जिज्ञासा दुःश्चिता का गुप्त रूप है कि जिज्ञासा करनी चाहिए और उन्हें ऐसे कार्य देने चाहिए जिनमें वह सफल हो।

मनोचिकित्सक ऐण्डरसन का यह कथन है कि सब मानव व्यवहार दुःश्चिता से बचाव पर ही आधारित है जो कुछ भी कोई व्यक्ति करता है जो विकल्प चुनता है जो प्रतिक्रिया करता है, प्रत्येक उसके व्यवहार का पद और विवरण दुःश्चिता को दुर रखने के लिए ही होता है हम चाहे कुण्ठा को इतना महत्व न दे, किन्तु यह तो अवश्य ही कि हमारा

प्रतिदिन के व्यवहार में विशेषकर दूसरों के साथ सम्बन्धों में कुण्ठा का समावेश अवश्य होता है।

कुण्ठा में कुछ लाभ भी निहित है। हमारी यह अभिलाषा कि हम कुण्ठा से बचें, हमें सावधानी बरतना और दूसरों के प्रति ध्यानशील होना सिखाती है। सामाजिक स्थितियों में बहुत कुछ सीखना। इस कारण होता है कि व्यक्ति कुण्ठा को कम करना अथवा दूर करना चाहता है। बालक अपने व्यवहार में परिवर्तन ले आते है ताकि अपने माता–पिता को निराश करें। अपने माता–पिता को प्रसन्न करने के लिए बालक परीक्षा पास करने के लिए मेहनत करते है।

एलीसन एवं देश के परीक्षण जो चलचित्र से सीखने में कुण्ठा का प्रभाव पता करने के लिये थे, इस परिणाम पर आए कि कुण्ठा के स्तर का बढ़ाने मे परीक्षण से प्राप्ताकों में वृद्धि होती है।

साधारण कुण्ठा ही व्यक्तियों को सीखना ग्रहण करने योग्य बनाती हैं यदि इस प्रकार की कुण्ठा ही सामाजिक स्थितियों में नहीं है तो व्यक्ति अपने अधिकार और दूसरों की भावना की ओर से लापरवाह हो जाते है ऐसे व्यक्ति साधारण कुण्ठा से विकास करना सीख लेते है। यह उन पर सामाजिक प्रभाव रखती है और व्यक्ति को आत्म–नियंत्रण और आत्मनिरोध सीखने के योग्य बनाती है। जो व्यक्ति दुःश्चिता की अधिकता अनुभव करते है वह सीखने में प्रगति नहीं कर पाते। वह इस प्रकार के व्यवहार प्रतिमानों को विकसित कर देते है जो अवांछनीय है। उच्च स्तर की कुण्ठा साधारण सीखनें में तो सहायक होती है किन्तु जटिल पदार्थो को सीखने में अवरोध डालती है। यह परिणाम एक ऐसे शिक्षक के लिए कठिन समस्या उत्पन्न कर देता है।

कुण्ठा के फलस्वरूप प्रतिक्रियाएं :–

कुण्ठा का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है। कुण्ठा से व्यक्ति का हृदय और मस्तिष्क प्रभावित होते है। आज के युग में महिलाओं के व्यावसायिक कार्य करने में उन्हें विविध पारिवारिक, सामाजिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। पुरूष प्रधान समाज

में कई स्थानों पर महिलाओं को उनके दुर्व्यवहार को मजबूरन सहना पड़ता है जिसके परिणाम स्वरूप मानसिक आघात पहुँचता हैं

वुडवर्थ के अनुसार – कुण्ठा के फलस्वरूप चिन्ता, प्रत्यागमन, स्थिरीकरण, दमन आदि प्रमुख प्रतिक्रियाएँ होती है।

डॉ. शर्मा– कुण्ठा के प्रभावों के अन्तर्गत बैचेनी तथा तनाव चिन्ता तथा आक्रमण संवेगात्मक कष्ट तथा मन शारीरिक विकार, रूढ़िवृति, उदासीनता प्रतिक्रियाएँ बताई है।

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में अध्यापिकाओं की विद्यालय में कुण्ठित व्यक्तित्व के संदर्भ में अध्ययन किया गया हैं कुण्ठा की दशा में व्यक्ति के व्यवहार में निम्न परिवर्तन आ सकता है।

1. वह आक्रमणकारी बन जाता है।
2. वह आत्मसमर्पण कर देता है।
3. वह कुछ समय के लिये एकान्त वाला बन जाता है।
4. वह किसी रोग का अनुभव करता है।

जो व्यक्ति कुण्ठा का शिकार होता है। वह इन चारों प्रकार के व्यवहारों में से किसी प्रकार का व्यवहार करता है। पर यह आवश्यक नहीं है कि इन चारो प्रकार के व्यवहारों में किसी एक प्रकार का व्यवहार करने वाला कुण्ठा का शिकार है।

कुण्ठा परिस्थितियों के घटक

क्र.स.	घटक
1.	विद्यालय शिक्षण सबंधी परिस्थितियाँ
2.	विद्यालय उच्च परिस्थितियाँ
3.	सामाजिक/नैतिक परिस्थितियाँ
4.	पारिवारिक परिस्थितियाँ
5.	राजनैतिक परिस्थितियाँ

1.2 समस्या का औचित्य :–

यदि समाज में बड़े पैमाने पर परिवर्तन करना है तो केवल एक ही साधन है और वह है शिक्षा। वैसे तो अन्य साधन भी इसमें सहायक हो सकते है, लेकिन शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसमें राष्ट्रव्यापी परिवर्तन संभव है और इसके लिये प्रत्येक अध्यापक के मानसिक स्वास्थय विज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक है जिससे कि वह अपने और छात्रों के मानसिक स्वास्थय को बनाये रखने में योग दे सके। क्योंकि स्वस्थ मस्तिष्क में ही विचारो भावों और ज्ञान का आसानी से संचार किया जा सकता है। आज की जरूरत हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली की है जिसमें धुमिल होती हुई नैतिकता को एक बार पुनः जाग्रत किया जा सके। शिक्षा द्वारा राष्ट्र में व्याप्त सभी समस्याओं का हल निकाला जा सकता है।
आज विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली के प्रति क्या सोच व समझ है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में लघु शोध के माध्यम से जानने की कोशिश करना शोधार्थी का उद्देश्य है।

मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण है जन्म से बालक पशुवत आचरण करता रहता है। उसके व्यवहार में सौन्दर्य लाने का कार्य शिक्षा करती है। बालक की वैयक्तिक प्रगति उसका शारीरिक मानसिक और भावात्मक विकास जब तक भली प्रकार नहीं हो पाता है जब तक शिक्षा नहीं करती है।

परन्तु आज की शिक्षा व्यवस्था कुपोषण से ग्रसित है अर्थात्, शिक्षा द्वारा प्रदत आधारशिलाओं में दरार आने लगी है जिससे शिक्षा आज महज औपचारिकता बनी हुई है। इसके अतिरिक्त शिक्षा में नवीनता, खोज आदि आवश्यक लक्ष्यों का अभाव बना हुआ है। शिक्षा द्वारा उत्पन्न समस्याओं का समय पर हल न निकाले जाने पर वीभत्स रूप ले लेती है। और उनके परिणाम भी हानिकारक होते है। आधुनिक काल में शिक्षा अपने उद्देश्यों से भटक रही है। जिस प्रकार अंधकार को दुर करने का साधन प्रकाश है उसी प्रकार व्यक्ति के सब सशंयो और भ्रमों को दुर करने का साधन शिक्षा है। शिक्षा व्यक्ति को जीवन में यथार्थ दर्शन कराती है।

1.3 समस्या कथन :–

''नागौर जिले की माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं (ग्रामीण एवं शहरी) की कुण्ठा परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन''

1.4 शोध से उभरने वाले प्रश्न :–

1. क्या माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में अन्तर पाया जाता है ?
2. क्या माध्यमिक स्तर के शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में अन्तर पाया जाता है?
3. क्या माध्यमिक स्तर के ग्रामीण सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में अन्तर पाया जाता है?
4. क्या माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में अंतर पाया जाता है ?
5. क्या माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण निजी विद्यालय की कार्यरत अध्यापकों की कुण्ठा परिस्थितियों में अंतर पाया जाता है ?

1.5 तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण :–

1. माध्यमिक स्तर :– माध्यमिक से तात्पर्य कक्षा 10 वी. तक कार्यरत अध्यापिकाओं से।

2. विद्यालय :– विद्यालय औपचारिक शिक्षा का केन्द्र है। विद्यालय वह स्थान है जहां बालक के व्यक्तित्व को महत्व दिया जाता है। विद्यालय सामुदायिक जीवन का केन्द्र है।

3. शिक्षक :– शि–शिखर तक ले जाने वाल, क्ष–क्षमा की भावना रखने वाला, क–कमजोरी पुरा करने वाला अर्थात् जो विद्यार्थी की हर गलती को क्षमा करने की भावना रखता है और उसकी हर कमजोरी दुर कर उसको शिखर तक ले जाता है वही सच्चा शिक्षक कहलाता है।

4. कुण्ठा – जब हमारे अभिप्रेरको के मार्ग में किसी ऐसी रूकावट के कारण बाधा उत्पन्न होती है जिसके फलस्वरूप वांछित लक्ष्य के प्राप्ति नहीं होती तब कुण्ठा उत्पन्न होती है।

5. ग्रामीण क्षेत्र – ऐसे क्षेत्र जहाँ व्यवसाय के रूप में मुख्यतः प्राथमिक व्यवसाय कृषि किया जात है, ग्रामीण क्षेत्र कहलाते है। साथ ही आधुनिकीकरण का अभाव पाया जाता है और जहां जनसंख्या कम होती है।

1.6 शोध के उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियों को जानना।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियों को जानना।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियों को जानना।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियों को जानना।
5. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण निजी विद्यालय की कार्यरत अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियों को जानना।

1.7 शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता ।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक नहीं पाया जाता।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक नहीं पाया जाता।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक नहीं पाया जाता है।
5. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण निजी विद्यालय की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक नहीं पाया जाता।

1.8 शोध विधी :–

किसी भी कार्य को सम्पन्न करने के लिए विधि एवं प्रविधियों का चयन गंभीरतापूर्वक करना चाहिए। शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण में परिस्थितियाँ एवं संबंध जो वास्तव में वर्तमान है, अभ्यास एवं पक्रियांऐ जो चल रही है, अनुभव जो किये जा रहे है अथवा नवीन दशाएं जो विकसित हो रही है, उन्ही से संबधित है।

सर्वेक्षण के प्रकार–

1. सामाजिक सर्वेक्षण
2. विद्यालय सर्वेक्षण
3. जनमत सर्वेक्षण

1.9 चर –

शोधकर्त्री ने अध्ययन में दो चर प्रयुक्त किये है :–

1. स्वतंत्र चर – अध्ययन में स्वतंत्र चर के रूप में माध्यमिक विद्यालय की परिस्थितियों को चुना गया है।

2. परतंत्र/आश्रित चर – अध्ययन में आश्रित चर के रूप में अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों को चुना गया है।

1.10 न्यादर्श :–

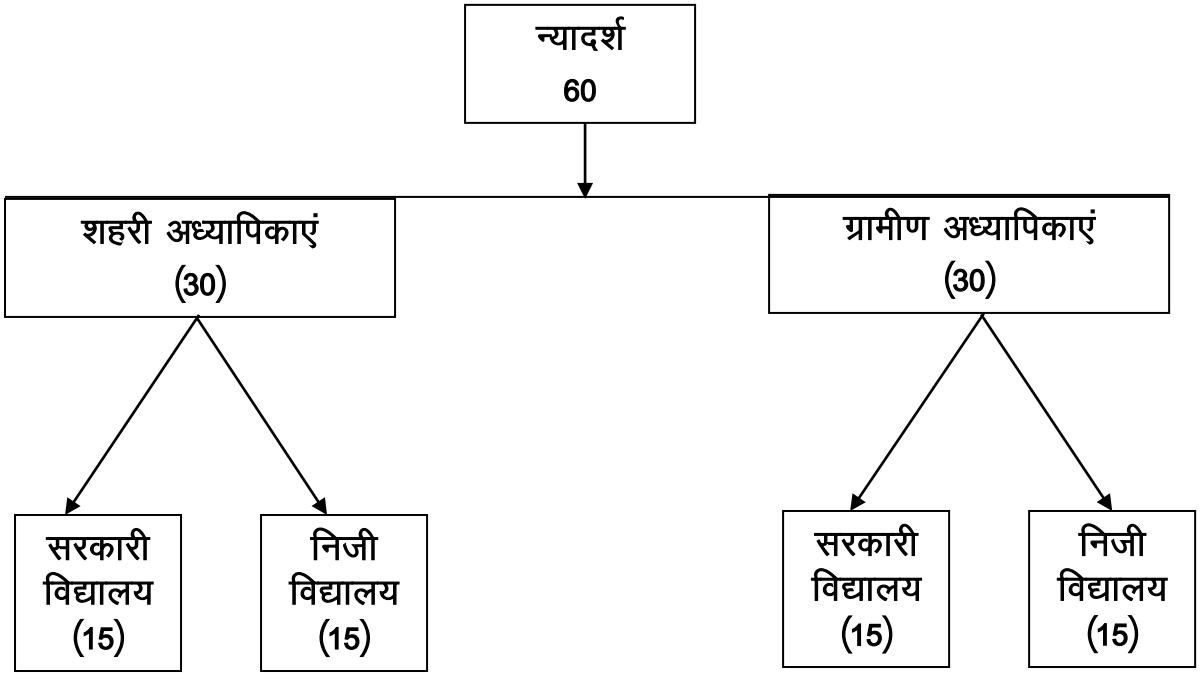

1.11 परिसीमन :–

प्रस्तुत शोध कार्य समय, साधन व शक्तियों को ध्यान में रखते हुये निम्न क्षेत्रों तक सीमित होगा।

1. यह अध्ययन अध्यापन क्षेत्र में सेवारत महिला अध्यापिकाओं तक सीमित होगा।
2. यह अध्ययन उन अध्यापिकाओं तक सीमित होगा जो सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत है।
3. यह अध्ययन उन अध्यापिकाओं तक सीमित होगा जो ग्रामीण अथवा शहरी क्षेत्रों के विद्यालय में अध्यापन कार्य करती है।
4. यह अध्ययन नागौर जिले से कुछ प्रमुख विद्यालयों जहाँ अध्यापिकाएं कार्यरत है तक सीमित होगा।
5. यह अध्ययन नागौर शहरी तथा ग्रामीण बालिका एवं बालक माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रहेगा जहां अध्यापिकाएं कार्यरत है।
6. यह अध्ययन केवल विद्यालयी परिवेश, सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिवेश, पारिवारिक परिवेश में उत्पन्न होने वाली कुण्ठा परिस्थितियों तक सीमित होगा।

7. यह अध्ययन नागौर शहर के आस–पास के कुछ गांवो जहां महिलाएं अध्यापन कार्य करती है – तक सीमित होगा।

1.12 उपकरण –

प्रश्नावली :–

प्रस्तुत शोध कार्य को सम्पन्न हेतु उपकरण रूप में प्रश्नावली का निर्माण करना आवश्यक समझा गया क्योंकि प्रश्नावली का उपयोग ही वर्तमान शोध कार्य के लिए सबसे उपयुक्त उपकरण माना गया। प्रश्नावली के अन्तर्गत समस्याओं से संबधित विभिन्न पक्षों पर प्रश्नों का निर्माण किया जाता है। जिनकी भाषा सरल हो तथा पद छोटे–छोटे हो। प्रश्नावली एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा उतरदाता बिना हिचक के उतर दे सकता है।

1.13 सांख्यिकी –

शोध कार्य में निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया है।

1. मध्यमान
2. प्रमाप विचलन (S.D)
3. टी– परीक्षण ('T' Test)

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन एवं पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावना :–

अन्वेषण किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित स्त्रोतों की प्राप्यता तथा उनके विषय में ज्ञान की प्राप्ति दोनों ही आवश्यक है। किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रभावहीन होने की संभावना होती है।

शिक्षा और अन्य व्यवहारगत विज्ञानों में किये गये शोध कार्यों में अनेक ऐसे है जिनमें उनसे सम्बन्धित साहित्य को गंभीरता से नहीं लिया गया है। उसे जो स्थान मिलना चाहिये, नहीं मिला है। कुछ शोधो में केवल अनुबंध मात्र होता है। शोध प्रतिवेदन से यदि इसे निकाल दिया जाये तो कोई अंतर नहीं पड़ता है। ऐसा प्रतित होता है कि इस अंश की अपेक्षा गलत धारणा पर आधारित है कि वह पूर्व में किये गये शोधों को एक सूची देकर सिद्ध करे कि जैसा शोध वह कर रहा है, वैसा शोध पहले नहीं किया गया है। वह सीमित उद्देश्य से दी गई सूची से पूरा नहीं हो पाता। यह केवल यह सिद्ध करता है कि पिछले शोधों से कुछ महत्वपूर्ण भिन्नता रखता है। तथापि शोधकर्ता के लिए यह प्रदर्शित करना आवश्यक नहीं है कि उसका शोध अद्वितीय है। इसकी अपेक्षा यह प्रदर्शित होना चाहिए कि उनका शोध किस प्रकार पूर्व शोधों से तुलनीय या भिन्न है। शोधकर्त्री द्वारा किसी भी परीक्षण की सफलता उसके द्वारा किये गये सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन पर निर्भर करती है। जिससे समय, श्रम की बचत एवं दोहराव जैसी समस्या से क्या बचा जा सकता।

2.2 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा :–

सम्बन्धित साहित्य से अभिप्राय अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपने शोध हेतु मार्गदर्शन अथवा दिशा–निर्देशन व सहायता मिलती है। सम्बन्धित साहित्य से ही अध्ययन की रूपरेखा, परिकल्पनाओं के निर्माण एवं अपने शोध कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता प्राप्त होती है।

सम्बन्धित साहित्य शोध कार्य के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सम्बन्धित साहित्य का जितना अधिक ज्ञान प्राप्त किया जाये उतना ही विषय को समझने में सहायता मिलती है। पूर्व शोध साहित्य के आधार पर ही शोधकर्ता अपने शोध का विषय, क्षेत्र, सीमा व विधि का निर्माण करता है। पूर्व में हुये अध्ययनों के आधार पर उसे भावी शोध में परिणाम ज्ञात करने में भी सहायता मिलती है। जहां शोधकर्ता के लिये नवीन मार्ग, नवीन दिशा की खोज का महत्व है वही उसे इस मार्ग पर विकास पाने व सफलता प्राप्त करने के लिये पूर्व मे हुये शोध साहित्य का ज्ञान होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

सम्बन्धित साहित्य क सर्वेक्षण के बिना यह ज्ञात नहीं हो सकता कि किस विषय में कौनसा क्षेत्र अनुसंधान के लिये शेष है। विभिन्न लेखको ने सन्दर्भ साहित्य के विषय में अपने विचार व्यक्त किये हैं

डब्ल्यू आर बोर्ग के अनुसार :– ''किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्यक्रम आधारित होता है। यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य को प्रभावहीन व महत्वहीन होने की संभावना है अथवा पुनरावृति भी हो सकता है।''

बेस्ट, जॉन डब्ल्यू के अनुसार – वास्तव में समस्त मानवीय ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में उपलब्ध हो सकता है। अन्य जीवधारियों से भिन्न जो कि नई पीढ़ी के साथ पुनः नये सिरे से प्रारम्भ करते है। मनुष्य के अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। मनुष्य के ज्ञान में अटूट क्रमिकता एवं प्रगतिशील होती है तथा अन्य जीव जन्तुओं को ज्ञान में प्रगतिशीलता एवं पुनरावृति होती है।

गुड बार एवं स्केटस के अनुसार एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधि अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।

2.3 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य :–

1. यह अनुसंधान के लिए सिद्धान्त, विचार, व्याख्याएं तथा परिकल्पनाएं प्रदान करता है। जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते है।

2. यह अनुसंधान के क्षेत्र में यह जानकारी प्रदान करता है कि क्या और कितना हो चुका है।

3. यह परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता है शोधकर्ता प्राप्त अध्ययन के आधार पर शोध परिकल्पनाएं बना सकता है।

4. चयनित समस्या के लिए किस विधि तथा प्रक्रिया का प्रयोग उपयुक्त होगा तथा कौनसी सांख्यिकी का प्रयोग करना होगा। इन सब की जानकारी देता है।

5. समस्या के प्रभावीकरण, अवधारणाएं सीमाकंन तथा परिकल्पना निर्माण में सहायता करता है।

2.4 सन्दर्भ साहित्य के लाभ :–

सन्दर्भ साहित्य के अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को निम्न लाभ होते हैः–

1. सन्दर्भ साहित्य वर्तमान तक हुए अनुसंधान कार्य की जानकारी प्रदान करता है।
2. सन्दर्भ साहित्य ही अनुसंधानकर्ता को अनावश्यक पुनरावृति से बचाता है।
3. किसी निश्चित क्षेत्र में अब तक हुये कार्यों की सुचनाएं देता है।
4. समस्या के चुनाव एवं विश्लेषण में सहायता देता है।
5. सन्दर्भ साहित्य समस्या के अध्ययन की गहरी सूझ पैदा करता है।
6. अनुसंधानकर्ता के ज्ञान उसकी सहायता एवं कुशलता को स्पष्ट करता है।
7. सन्दर्भ साहित्य अनुसंधानकर्ता को समय की बर्बादी से बचाता है।
8. सन्दर्भ साहित्य अनुसंधानकर्ता को संभावित त्रुटियों से सावधान कराता है।
9. सन्दर्भ साहित्य पूर्व के कार्य में एकत्रित किये गये आंकड़े वर्तमान में हो रहे अनुसंधान कार्य में सहायता देता है।

2.5 सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत :–

1. पुस्तकें और पाठ्य पुस्तको की सामग्री– पुस्तके बहुत उपयोगी होती है। विषयसूचक पुस्तके बताती है कि पुस्तके प्रेस में है अथवा छपने वाली है। कुछ पुस्तकों में विशिष्ट सन्दर्भ पाये जाते है। सभी आंग्ल भाषा में प्रकाशित होती है।

2. सामयिक प्रकाशन – समय–समय पर प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएं जो क्रमबद्ध रूप से निश्यित समय के बाद प्रकाशित होती है। जैसे – वार्षिक पुस्तिका, अभिलेख, समाचार–पत्र व पत्रिकाएं आदि।

3. विश्वकोष –

विश्वकोष में विशेषज्ञों द्वारा लिखे गये विभिन्न विषयों पर संक्षिप्त सूचनाये होती है। शैक्षिक शोध का विश्वकोस 10 वर्ष बाद प्रकाशित होता है और यह ज्ञान कोस 10 अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की समितियों के निर्देशन में तैयार किया है।

4. पत्रावली, पुस्तके तथा निर्देशिका –

समय–समय पर प्रकाशित होने वाली पत्रावली, पुस्तके तथा निर्देशिका भी अध्ययन में सहायक रहती है।

5. समाचार–पत्र

प्रचलित समाचार पत्र शिक्षा के क्षेत्र के नये विकास, सम्मेलन अभिलेख और भाषणों की नवीनतम सूचनाएं देते है। नवीन घटनाएं और शैक्षिक समाचार भी समाचार पत्रों में प्रकाशित होते है।

6. शिक्षा सम्बन्धी सूची –

शिक्षा सम्बन्धी सूची में वही उद्देश्य पूर्ण होते है जो किसी सम्बन्धी सूची से होता है।

7. डिक्शनरी एण्ड इनसाईक्लोपीडिया

1. एन फोउर एण्ड एफ – डिक्शनरी ऑफ प्रीको एनेलिस न्यू इयर साईक्लोजीकल लाईब्रेर–1950

2. गुड सी बी – डिक्शनरी ऑफ एज्यूकेशन न्यूयॉर्क मैक ग्राहित कम्पनी–1960

2.6 शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :–

सम्बन्धित साहित्य से अभिप्राय उन सभी पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों ओर अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपने शोध हेतु मार्गदर्शन अथवा दिशा–निर्देशन व सहायता मिलती है। साहित्य का जितना ज्ञान प्राप्त किया जाये उतना ही विषय को समझने में सहायता मिलती है।

उक्त अध्ययन का विशेष रूप से अध्ययन कर एवं विभिन्न मनोवैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित कुण्ठा संबंधी साहित्य का अध्ययन किया गया। उन अध्ययनों में प्रमुख निम्नानुसार हैः–

भारत में किया गया शोध अध्ययन :–

1. रोजेन्ज्वॉईग चित्र कुण्ठा विधि का भारतीय परिवेश में बदलने का कार्य **डॉ. उदय पारीक** ने किया। इन्होनें दिल्ली की स्कूलो के विभिन्न आयु वर्ग के 1000 छात्रों पर परीक्षण कर प्रश्नावली का मानवीकरण किया।

परिणामः–

1. अंह प्रतिरक्षा, बाह्य अतिक्रमण का तत्व आयु स्तर के अनुसार महत्वपूर्ण है।

2. आयु वृद्धि के साथ अन्तः अतिक्रमण और अनाक्रमण का गुण बढ़ता जाता है, बाह्य अतिक्रमण का स्तर कम होता जाता है।

3. समूह मापदण्ड का औसत आयु वृद्धि के अनुसार बढ़ता जाता है।

2. छात्र मोहन शर्मा ने अधि सामान्य, सामान्य और असामान्य बच्चों में कुण्ठा प्रतिक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया है, उन्होंने परिक्षण में 54 प्रतिशत ग्रामीण व 54 शहरी बालकों को लिया है।

परिणाम –

(अ) सामान्य, असामान्य बालकों की अपेक्षा अधिसामान्य बालकों में अहं प्रतिरक्षा अधिक है। आवश्यकता प्रदर्शन दोनों वर्गों में कम है। बाह्य आक्रमण उच्चतर है।

(ब) सामान्य बालकों में कुण्ठा का सामना करने की क्षमता है। बाह्य अतिक्रमण सामान्य से उच्च है।

3. प्रो. के कुमार द्वारा 1963 में 100 बालकों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया गया। जिसमें अधिसामान्य, सामान्य और असामान्य तीनों प्रकार के बालक सम्मिलत थे। इनका अध्ययन रोजेन्ज्वॉईंग 9 घटकों पर आधारित था। जिसमें बालक के अहमं अतिक्रमण, अहं प्रतिरक्षा, बाधा प्रधानता, आवश्यकता प्रदर्शन आदि का अध्ययन किया।

परिणाम –

(अ) अधिसामान्य वर्ग के बालकों में अह प्रतिरक्षा तत्व अधिक है और ये कुण्ठा की स्थिति का सामना करने में अधिक सक्षम है।

(ब) सामान्य बालकों में अन्य बालकों पर अतिक्रमण करने की पवृति है।

(स) असामान्य बालकों में अहं प्रतिरक्षा तत्व कम होता है तथा आवश्यकता प्रदर्शन और बाधा प्रधानता ज्यादा मात्रा में होता है इनमें कुण्ठा का सामना करने की क्षमता नही होती।

(द) समूह अनुरूपता अधि सामान्य और सामान्य बालकों में समान होती है। असामान्य बालको में इसका अभाव होता है।

4. **चन्द्र सिंह चौधरी** ने उदय पारीक द्वारा निर्मित रोजेन्जवाईग पी. एफ. स्टडी के भारतीय रूप को काम में लेते विभिन्न सामाजिक व आर्थिक स्तर के बच्चों पर कुण्ठा की प्रतिक्रिया जानने हेतु अध्ययन किया। उन्होंनें कक्षा आठवीं के 100 विद्यार्थियों को लिया। अध्ययन द्वारा व्यतिव का परीक्षण किया।

परिणाम –

(1) बालकों के वातावरण पर दोषारोपण की पवृति पायी गई।

(2) निम्न उच्च वर्ग में बाधा प्रधानता ज्यादा है।

5. प्रकाश नारायण नाटनी ने विभिन्न स्कूलों के बालकों के पी. एफ. टेस्ट देकर पठनारम्भ योग्यता ज्ञात करने के लिए परीक्षण किया। परिणाम निम्न रहे।

(1) छात्रों की पठनारंभ की योग्यता का बाधा प्रधानता तत्व से महत्वपूर्ण संबंध है।

(2) जिन बालकों में अहं प्रतिरक्षा तत्व अधिक है उनमें पठनारंभ योग्यता भी अच्छी पायी गई है।

6. उर्मिला शर्मा – किशोर बालक–बालिकाओं में कुण्ठा के फलस्वरू क्रियाओं के विकासात्मक क्रम का अध्ययन रोजेन्ज्वाईंग परीक्षण के आधार पर किया गया। 13 से 16 वर्ष किशोर छात्रों और छात्राओं पर किया गया।

परिणाम –

(1) इस उम्र के किशोर बालक–बालिकाओं में अहं प्रतिरक्षा संबंधी कुण्ठा तत्व सबसे अधिक सक्रिय आक्रमण इसके बाद अनाक्रमण व सबसे कम अन्तः अतिक्रमण पाया गया।

7. त्रिपाठी के.के. – विद्यालयी बालकों व किशोरों में कुण्ठाएँ (पी.एच.डी.) गोरखपुर विवि. 1978।

परिणाम –

(1) बुद्धि कुण्ठा से संबंध कारक प्रतीत हुआ।

(2) बालिकाओं के समूह साम्य अधिक पाया गया।

(3) अन्तर्मुखी बालक–बालिकाएँ कुण्ठा के प्रति उन्मुख थे।

(4) कुण्ठा शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

8. संदीप भार्गव – प्राथमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों की कुण्ठा के कारणों का सर्वेक्षण किया गया। इन्होंने साक्षात्मकार द्वारा अध्यापकों में कुण्ठा के कारणों को ज्ञात करने का प्रयास किया। साथ ही कुण्ठा के कारणों से संबंधी प्रश्नावली का निर्माण कर बीकानेर शहर में बी.एड कर रहे सेवारत प्राथमिक अध्यापकों को अपने सर्वेक्षण हेतु चयनित किया। प्रश्नावली की उत्तर सीमा लिकर्ट मापनी पर आधारित बनायी गई।

कुण्ठा के कारण प्रतिशत आधार पर निम्न रहेः–

(क) श्रेणी विभाजन के आधार पर 80 प्रतिशत से अधिक उच्च भारक्रम प्राप्त करने वाली कुण्ठ परिस्थितियाँ दो हैं।

(1) जब शिक्षा प्रशासन अधिकारी विद्यालय की समस्याओं पर ध्यान नहीं देते हैं तो उन्हें कोसने को मन करता है।

(2) विद्यालय के प्रशासन में जब स्थानीय नेतागण हस्तक्षेप करते हैं तो उन्हें बुरा लगता है।

(ख) भार क्रमानुसार 60 प्रतिशत से 80 प्रतिशत की औसत से ऊपर कुण्ठा परिस्थितियों की कुल संख्या 19 है।

क्रमांनुसार प्रतिशत का औसत ज्ञात कर कुण्ठा परिस्थितियों की कुल संख्या निर्धारित की गई।

9. गायनानी द्वारा आगरा के 300 विभिन्न कक्षाओं के छात्रों पर कुण्ठा प्रतिक्रिया जाँच प्रश्न पत्र द्वारा अध्ययन किया जिसमें एक सैट 6 चित्रों काथा और दूसरा स्वनिर्मित प्रक्षेपण विधि आवश्यकता संप्राप्ति प्रश्नावली।

परिणाम –

(1) अधिकांश छात्रों के माता–पिता उनकी कुण्ठाओं के प्रति सचेत नहीं थे।

(2) समस्त आयु वर्गों में से ई व डी (किशोर) आयु वर्ग तुलनात्मक रूप से अधिक कुठित था।

(3) विद्यार्थियों के अहं की संतुष्टि कुण्ठा निवारण में सहयोगी होती है एवं जैसे–जैसे आयु बढ़ती है उनकी प्रतिक्रिया में सार्थक परिवर्तन एवं विकास होता है।

10. एम भट्टाचार्य द्वारा किशोर बालिकाओं की कुण्ठाओं का अध्ययन किया गया। जिसमें उन्होनें पश्चिम बंगाल के माध्यमिक विद्यालयों के 804 किशोर बालिकाओं पर जो कक्षा 9 से 12 में अध्ययन कर रही थीं, की कुण्ठा प्रतिक्रियाओं प्रश्नावली, बुद्धि परीक्षण एवं कुप्पु स्वामी की आर्थिक आधार प्रश्नावली का उपयोग किया है।

परिणाम –

(1) किशोर बालिकाओं में सुरक्षा स्वतन्त्रता एंव अधिकत पाई जाती है एवं उसकी पूर्ति के अभाव में बाधा कुण्ठाओं के विकास में सहयोगी होती है।

(2) कुण्ठा एवं मानसिक अस्वस्थता में सार्थक सह संबंध हैं।

(3) मानसिक अस्वस्थता एवं कुण्ठा निर्धारण के बीच धनात्मक संबंध पाया गया।

11. शर्मा (1985) द्वारा वाराणसी शहर की कार्यशील महिलाओं के बीच कुण्ठाओं का अध्ययन किया गया। इन्होंने 240 विवाहित एवं 160 अविवाहित कार्यशील महिलाओं यथा अध्यापिका, नर्स, डॉक्टर, बैंक कर्मचारी एवं दफ्तरों में कार्य करने वाली महिलाओं का अध्ययन उदय पारीक द्वारा निर्मित पी. एफ. स्टडी द्वारा किया।

परिणाम –

(1) समस्त श्रेणियों की महिलाऐं पूर्ण समायोजन पाई गई जिनमें सर्वाधिक समायोजन बैंक कर्मचारी महिलाओं का पाया गया।

(2) वैवाहिक स्थिति का कुण्ठा परिस्थितियों से कोई संबंध नहीं पाया गया।

(3) कुण्ठा एवं विभिन्न मूल्यों में सार्थक सह संबंध पाया गया।

12. ठाकुर. आर. के (1997) , ''माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापिकाओं की समस्याएँ एक अध्ययन।''

उद्देश्यः–

1. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापिकाओं की प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापिकाओं की वितीय सेवा शर्तो संबंधित समस्याओं का अध्ययन करना।

निष्कर्षः– इन्होने निष्कर्ष रूप में अध्यापिकाओ की प्रशासनिक वितीय सेवा शर्तो, विद्यालयी वातावरण आदि क्षेत्रों से संबंधित अनेक समस्याओं पर प्रकाश डाला।

13. चौबिसा, रश्मि (1998), ''प्राथमिक शाला में कार्यरत बी.एड प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा अनुभुत समस्याओं का अध्ययन।''

उद्देश्य :– 1. प्राथमिक कक्षाओं में कार्यरत बी.एड प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा अनुभुत समस्याओं का अध्ययन करना।

2. राजकीय व निजी संस्थानों के अध्यापकों की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. अध्यापक व अध्यापिकाओं की समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

1. बी.एड के दौरान सीखी गई शिक्षण विधियों का प्रयोग अधिकतर अध्यापक नहीं कर पाते है क्योंकि वहां उनकी उपयोगिता नहीं होती है।

2. छोटे बच्चों को शिक्षा देने के लिए समय–समय पर प्रशिक्षण जरूरत महसूस होती है।

3. प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों की कमी के कारण अतिरिक्त प्रशासनिक कार्य करने पड़ते है जिससे वे बाधा महसूस करते है।

14. विजय, मनीषा कुमारी (1998), ''माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों में निजी चरो – लिंग, अनुभव, व्यवसाय प्रशिक्षण वेतन और धर्म से सबंधित समस्याओं का अध्ययन।''

उद्देश्यः–

1. माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों में कार्य के संदर्भ में निजी कारकों–लिंग, अनुभव, व्यवसाय, वेतन, धर्म सबंधित समस्याओं का पता लगाना।

2. महिला तथ पुरूष शिक्षकों में कार्य संतुष्टि के स्तर का पता लगाना।

निष्कर्षः–

1. अनुभवी शिक्षकों जिनकों अधिक वेतन मिलता था उनकी तुलना में नवनियुक्त शिक्षकों को कम वेतन मिलता था तथा वे कम संतुष्ट पाए गए।

2. शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में धर्म का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ऐसा अध्ययन में पाया गया।

3. पुरूष शिक्षकों की तुलना में महिला शिक्षिकाओं में कार्य–संतुष्टि का स्तर उच्च पाया गया।

15. गुप्ता, रानी कुमारी (2000) :– अध्यापिकाओं की सीमाओं एवं व्यावसायिक दायित्वों का एक निर्वाहः एक अध्ययन।

उद्देश्यः–

1. माध्यमिक शालाओं में सेवारत अध्यापिकाओं की सामाजिक व पारीवारिक सीमाओं का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक शालाओं में सेवारत अध्यापिकाओं की समस्याओं हेतु सुझाव देना।

3. अध्यापिकाओं की अध्ययन एवं कार्य करने की दशाओं का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

1. समाज तथा परिवार के लोग अध्यापिकाओं से अधिक अपेक्षा रखते है।

2. सामाजिक दृष्टि से सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के व्यावसायिक दायित्व का गैर सरकारी कार्यरत महिलाओं से कम पाया गया।

3. समाज में शिक्षित महिलाओं का स्थान ऊँचा है तथा समाज वाले उन्हें सम्मान देते है।

16. साहू, भरत कुमार, जैन, रश्मि, देउस्कर, एम.डी. (2010) ने अपने शोध ''शहरी एवं ग्रामीण किशोर छात्रों के मानसिक स्वास्थय से जुड़ी असुरक्षा की भावना का तुलनात्मक अध्ययन।''

निष्कर्षः– शहरी किशोर छात्र समूह का मानसिक स्वास्थय एवं उससे जुड़ी सुरक्षा, असुरक्षा की भावना ग्रामीण किशोर समूह की तुलना में सार्थक रूप से अधिक है।

17. कल्पना जैन. पी. एच. डी. 2011, ''सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशारों की समस्याओं का अध्ययन।''

उद्देश्य :–

1. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों की समस्याओं का अध्ययन करना।

2. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की समस्याओं का अध्ययन करना।

3. सरकारी एवं गैर विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरियों की समस्याओं का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

1. सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरों की समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

2. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं

18. भोजक, गिरिराज (पी.एच.डी.) 2011, जैन विश्वभारती संस्थान लाडनू ''माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड विद्यालयों में अध्ययरत विद्यार्थियों की दुश्चिता व्यक्तित्व एवं बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन''

उद्देश्यः–

1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत अध्ययन छात्रों की दुश्चिता, व्यक्तित्व एवं बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

2. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत अध्ययनरत छात्राओं की दुश्चिता, व्यक्तित्व एवं बुद्धि लब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष

1. आकड़ो की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत अध्ययन छात्रों की दुश्चिता, में सार्थक अन्तर नही पाया जाता।

2. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत विद्यालयों में अध्ययन छात्राओं की दुश्चिंता, में आंशिक अन्तर पाया गया।

19. माधुर दीप्ति (2012) ''माध्यमिक स्तर के बालक – बालिकाओं के मानसिक थकान का तुलनात्मक अध्ययन, जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाडनूं M.ed.

उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण बालक–बालिकाओं के मानसिक थकान का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण बालक–बालिकाओं के मानसिक थकान में सार्थक अन्तर नहीं पाया।

20. M. Raj Kumar (2017). ''रॉल ऑफ योगा एण्ड मेडिटेशन इन झाजिंग मेंटल हेल्प सेल्फ कान्सेप्ट एण्ड एचीवमेन्ट मोटिवेशन अमंग स्कूल स्टूडेंट। Alaga PPa university Tamilnadu P.H.D

उद्देश्य :– योगा और मेडिटेशन थैरेपी का स्कूल लेवल के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थय, आत्मसम्प्रत्य और अभिप्रेरणा स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

योगा और मेडिटेशन थैरेपी का स्कूल लेवल के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थय, आत्मसम्प्रत्य और अभिप्रेरणा स्तर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

21. Kamboj Shilpa, Anjali Malik & Kohli Sarveep (2017), मेंटल हेल्थ ऑफ पेशेन्ट विद क्रोनिक डिनिज जर्नल ऑफ इण्डिया हेल्थ साइक्लोजी Volume No.11 PP-68

उद्देश्य :–

सकारात्मक सोच की लंबी बिमारी पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

सकारात्मक सोच द्वारा लंबी बिमारी को नियन्त्रित किया जा सकता है।

विदेशों में किया गया शोध अध्ययन :–

22. डोल्टा, मीना स्वैचनी (2005), ''इम्पैक्ट ऑफ हामे एनवायरमेंट ऑफ द स्कोलोस्टिक एचीवमेंट ऑफ चिल्ड्रन'' meenawatchhal@gmail.com

उद्देश्य :–

1. पारिवारिक वातावरण का छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सम्बन्धों का अध्ययन।

2. उच्च स्तर के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह सम्बन्ध ज्ञात करना।

निष्कर्ष :–

1. पारिवारिक वातावरण का छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के साथ सकारात्मक संबंध है।

2. उच्च स्तर के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि के साथ सह सम्बन्ध है।

23. होपका, डेरेफ (2005)– ''द इफैक्अटस ऑन परफोरमेंस आई.क्यू. सार्स एगजाइटी स्ट्रेस एण्ड कोपिंग वा 18 मार्च 2005, पृ.स.–17–35.

उद्देश्य :–

दुःश्चिन्ता का बुद्धिलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :–

टैस्टिंग दुश्चिन्ता सामान्य दुःश्चिन्ता में से केवल टेस्टिंग दुःश्चिन्ता मनोवैज्ञानिक अनुक्रिया और ऑनलाइन दुःश्चिन्ता में से केवल टेस्टिंग दुःश्चिन्ता एवं हार्ट रिएक्टिविटी धनात्मक का प्रभाव बुद्धिलब्धि पर होती है।

24. फोग, एस (2005), ''द फेक्ट ऑफ फैमिली स्ट्रक्चर सोशियों इकॉनोमिक स्टेटस ऑन स्टूडेन्टस एकेडमिक एचीवमेन्ट'' एम.बी.बुच फिथ्थ सर्व इन रिसर्च एज्यूकेशन, एन.सी.ई.आर.टी वॉल्यूम– द्वितिय पृष्ठ संख्या 967

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक सरंचना के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

2. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक, आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करना।

3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता के व्यवहार के प्रभावों का अध्ययन।

निष्कर्ष :–

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक सरंचना सामाजिक, आर्थिक स्थिति तथा माता–पिता के व्यवहार का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

25. सुसान मेरी एल्डर्ड (1999) – ''द इफैक्टस ऑफ क्राइसिल इंटरवेशन टीम ट्रेनिंग ऑन कॉपिग स्किल्स एग्जाइटी एण्ड रेडीनेस फॉर इंसीडेन्टस ऑफ स्कूल वाइलेन्स''

उद्देश्य :– विषय परिस्थितियों तथा सम परिस्थिति वाले सदस्यों के समूह के बीच दुःश्चिन्ता में अन्तर का निर्माण करना।

निष्कर्ष :–

विषम परिस्थिति तथा सम परिस्थिति वाले सदस्यों के समूह के बीच दुःश्चिन्ता मे सार्थक अंतर पाया गया।

2.7 सम्बन्धित साहित्य से निष्कर्ष :–

उपर्युक्त अध्ययनों का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि इनमें विद्यालय की विभिन्न परिस्थितियों के अध्ययन का अभाव है। छात्रों/छात्राओं अध्यापकों आदि पर प्रक्षेपण विधि से भी अध्ययन हुए है। लेकिन शोधकर्त्री ने इस अध्ययन में केवल अध्यापिकाओं की विद्यालय परिस्थितियों द्वारा उत्पन्न कुण्ठाओं का प्रश्नावली विधि द्वारा सर्वेक्षण कर अध्ययन किया हैं

शोधकर्त्री ने इस अध्ययन में विशेष तौर पर उन परिस्थितियों को सम्मिलित किया। जिसके द्वारा अध्यापिकाओं में कुण्ठा की स्थितियां विकसित होती है। यदि उन परिस्थितियों को दुर कर दिया जाये तो वे (अध्यापिकाएं) शिक्षण शिक्षा एवं विभाग के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकेगी।

तृतीय अध्याय

शोध विधि, उपकरण एवं न्यादर्श

3.1 प्रस्तावना :–

सम्बन्धित साहित्य के विश्लेषण के पश्चात् अनुसंधान कार्य में किसी में किसी भी शोध समस्या के समाधान के लिए और उसके उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अनुसंधान विधि, प्रविधि एवं उपकरणों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना हैं। विधि, प्रविधि एवं उपकरण, सम्पूर्ण अनुसंधान कार्य में आधारशिला रूपी नींव है। शिक्षा प्रदान करने का कार्य अध्यापक व अध्यापिकाएं करती हैं। अध्यापिकाओं को विभिन्न क्षेत्रों, विभिन्न प्रकार की कुण्ठाओं से ग्रसित होना पड़ता है। शोधकर्त्री ने इन्ही कुण्ठाओं का अध्ययन करने तथा कुण्ठा परिस्थितियों को ज्ञात करने का प्रयास किया है। इस कार्य को सम्पन्न करते समय विशिष्ट अवस्थाओं को ध्यान में रखा गया है। जैसे इस क्षेत्र मे पूर्व में कितना कार्य हो चुका है। तथा इसकी क्या शैक्षिक उपयोगिता हैं। अनुसंधानकर्त्ता अपने अनुसंधान को प्रारम्भ करने से पूर्व सभी पक्षों के सम्बंध पर वह निर्णय लेकर नियोजन करता है और नियोजन के आधार पर वह अनुसंधान कार्य में आने वाली कठिनाईयों का सामना आसानी से कर पाता है। अतः यह अतिआवश्यक है कि शोध कार्य शुरू करने से पूर्व उपकरण व विधियों का नियोजन व निर्माण किया जाये। तभी अनुसंधान कार्य प्रभावी बन सकेगा।

3.2 अनुसंधान का अर्थ :–

अनुसंधान को अंग्रेजी में **रिसर्च** कहते है। जो दो शब्दों से बना हैं। इसमें **रि** का अर्थ **'पुनः'** तथा सर्च का अर्थ **'खोजना'** है अर्थात् किसी तथ्य की पूरा मनोयोग से खोज करना।

अनुसंधान का अर्थ पूर्णतया तथ्यों, ज्ञान एवं घटनाओं की खोज करना ही नहीं है, अपितु नवीनतम तथ्यों के सन्दर्भ में स्वीकृत निष्कर्षो के परिशोधन हेतु आलोचनात्मक ढंग से एवं विस्तारपूर्वक परिक्षण एवं अन्वेक्षण करना भी उसके अन्तर्गत आता है। इसलिए इसे रि (पुनः) सर्च (खोज) की संज्ञा दी गई हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में यह बतलाया गया है कि अध्ययन में किस शोध विधि का चयन किया गया है तथा न्यादर्श के चयन में कौनसी विधि का चयन व उपयोग किया गया है तथा शोध में कौन–कौन उपकरण प्रयुक्त किये गये है। उनका विवरण तथा किन सांख्यिकी विधियों का चयन किया गया हैं। उनका विस्तार से उल्लेख किया जाता हैं। अनुसंधान एक वैज्ञानिक खोज है जो क्रमबद्ध प्रयासो द्वारा ईमानदारी के साथ बुद्धिपूर्वक पूर्णरूपेण की जाती हैं।

3.3 अनुसंधान की परिभाषाएं :–

अलग–अलग विद्वानों व शिक्षाविदों ने अनुसंधान की अनेको परिभाषाएं दी है जो निम्न प्रकार से हैः–

डब्ल्यू.एम. टेवर्स :– ''शिक्षा अनुसंधान वह प्रक्रिया है, जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास करती हैं।''

जॉन डब्लू. बेस्ट :– ''अनुसंधान अधिक औपचारिक, व्यवस्थित तथा गहन प्रक्रिया है, जिसमें वैज्ञानिक विश्लेषण विधि को प्रयुक्त किया जाता है, जिसके फलस्वरूप निष्कर्ष निकाले जाते है, और उनका औपचारिक लेख तैयार किया जाता हैं।''

मैकग्रेथ एवं वाटसन के अनुसार :– अनुसंधान एक प्रक्रिया है, जिसमें प्रविधि का प्रयोग किया जाता है जिसके निष्कर्षो की उपयोगिता है ज्ञान प्राप्ति के लिये प्रोत्साहित करे, समाज के लिये सहायक हो तथा मनुष्य को अधिक प्रभावशाली बना सके। समाज तथा मनुष्य अपनी समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से हल करे।''

रैडमैन और गौरी के अनुसार :– ''नवीन ज्ञान की प्राप्ति हेतु व्यवस्थित प्रयत्न को हम अनुसंधान कहते हैं। तत्व, चर अथवा परिस्थितियां हो सकती है, उनकी विश्लेषण द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है। उसके बाद विश्लेषण द्वारा ही उनमें से कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण चरो का चुनाव करके उनका समस्या समाधान के रूप अथवा प्रश्नों के संभावित उतरों के रूप में परिक्षण किया जाता हैं।

स्पार एवं स्वेसन के अनुसार :– कोई भी विद्वतापूर्वक अनुसंधान की सत्य के लिए, तथ्यों के लिये निश्चितताओं के लिए अन्वेषण हैं।''

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा समस्याओं का समाधान करके ज्ञान में वृद्धि की जाती है। वस्तुतः ज्ञान मे वृद्धि की प्रक्रिया ही

अनुसंधान है। शिक्षण तथा व्यवहार के विकास की समस्याओं का समाधान शैक्षिक अनुसंधानों द्वारा किया जाता हैं।

3.4 अनुसंधान की विशेषताएं :–

अनुसंधान की निम्न प्रमुख विशेषताएं होती है :–

1. अनुसंधान तथ्यों पर आधारित एक अनुभवगत प्रक्रिया होती है। यह केवल कल्पना की उड़ान अथवा अमूर्त चिन्तन पर आधारित नहीं होता।

2. अनुसंधान में समस्या से संबंधित परिकल्पना का निर्माण करना होता है।

3. अनुसंधान में व्यक्तिगत पक्षो, भावनाओं तथा विचारों को महत्व नहीं दिया जाता हैं।

4. अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया होती है, जो विशिष्ट ज्ञान, क्रमबद्धता और शुद्धता पर बल देती है। अनुसंधान की रूपरेखा तैयार करने, अध्ययन सामग्री एकत्र करने, सामग्री का विश्लेषण करने के लिये विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता होती है साथ ही सम्पूर्ण कार्य बड़े व्यवस्थित ढंग से क्रमबद्ध रूप से करना होता हैं।

5. अनुसंधान अत्यन्त उद्देश्य, धैर्यपूर्ण तथा विवेकपूर्ण होता है।

6. अनुसंधान में विश्लेषण वैज्ञानिक तथा सांख्यिकीय पद्धति से किया जाता है। इसलिए अनुसंधान का स्वरूप कुशल विशिष्ट तथा वस्तुनिष्ठ होता हैं।

3.5 तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण :–

1. माध्यमिक स्तर – माध्यमिक स्तर से तात्पर्य कक्षा 10 वीं तक कार्यरत अध्यापिकाओं से हैं।

2. विद्यालय – विद्यालय औपचारिक शिक्षा का केन्द्र है। विद्यालय वह स्थान है जहां बालक के व्यक्तित्व को महत्व दिया जाता है। विद्यालय सामुदायिक जीवन का केन्द्र हैं।

3. शिक्षक – शि–शिखर तक ले जाने वाला, क्ष–क्षमा की भावना रखने वाला, क – कमजोरी दूर करने वाला अर्थात् जो विद्यार्थी की हर गलती को क्षमा करने की भावना रखता है और उसकी हर कमजोरी दूर कर उसको शिखर तक ले जाता है वही संख्या शिक्षक कहलाता हैं।

4. कुण्ठा – जब हमारे अभिप्रेरकों के मार्ग में किसी ऐसी रूकावट के कारण बाधा उत्पन्न होती है जिसके फलस्वरूप वांछित लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती तब कुण्ठा उत्पन्न होती है।

5. ग्रामीण क्षेत्र – ऐसे क्षेत्र जहां व्यवसाय के रूप में मुख्यतः प्राथमिक व्यवसाय कृषि किया जाता है, ग्रामीण क्षेत्र कहलाते है। साथ ही आधुनिकीकरणका अभाव पाया जाता है और जहां जनसंख्या कम होती हैं।

3.6 परिकल्पना :–

कोई भी शोध प्रबंध का कार्य जब तक प्रारम्भ नहीं हो पाता जब तक शोधकर्ता अपने शोध कार्य की परिकल्पना के द्वारा परिसीमन न कर ले। परिकल्पना के अभाव में शोधकर्ता को शोध सामग्री हेतु इधर उधर भटकना पड़ता है। जिससे समय व धन दोनों ही का अपव्यय होता हैं। परिकल्पना के निर्माण के बिना कोई भी प्रयोग नहीं हो सकता और न ही वैज्ञानिक ढंग का अनुसंधान सम्भव हैं। परिकल्पना का निर्माण समस्या की प्रकृति पर निर्भर हैं।

3.7 परिकल्पना का अर्थ एवं स्वरूप :–

जब किसी व्यक्ति के समक्ष कोई कठिनाई उत्पन्न हो जाती है तो वह उसके निवारण के उपाय भी सोचने लगता है। फलस्वरूप जो उपाय उसके मस्तिष्क में आते है वे ही समस्या के सम्भावित समाधान होते है। यह दूसरी बात है कि वह किसी प्रश्न का स्तर खोजनें की कोशिश करता है तथा बाद में यह परीक्षण करता है कि वे कहां तक सत्य है ये सामान्यनुमाना ही परिकल्पनाएं कहलाती हैं।

परिकल्पना शब्द का अर्थ :–

जब कोई समस्या व्यक्ति के समक्ष उत्पन्न होती है और उसका समाधान खोजने का वह प्रयास करता है, तो पहले अपने ज्ञान, अनुभव, अध्ययन आदि के आधार पर कल्पना करता है कि उसका सम्भव सामाधान क्या हो सकता हैं। इसी प्रकार जब किसी प्रश्न का उतर खोजने का प्रयास करता है, जब पहले कल्पना करता है कि उसका सम्भावित उतर क्या हो सकता है। इन सम्भावित समाधानो, सम्भावित उतरों को वह सामान्यानुमानों के रूप में प्रस्तुत करता है तथा बाद में यह परीक्षण करता हे कि वे कहां तक सत्य है। ये समान्यानुमान ही परिकल्पनाएं कहलाती है। परिकल्पना शोधकर्ता को कार्य करने की प्रेरणा देती है। परिकल्पना की पुष्टि हो जाने के बाद निष्कर्ष निकल आते है।

परिकल्पना को अग्रेंजी में **Hypothesis** कहते है जो दो शब्दों से मिलकर बना है। **हाइपो** (Hypo) **थीसिस** (Thesis) **हाइपो** का अर्थ है – **सम्भावित** या जिसकी पुष्टि की जाये तथा **थीसिस** का अर्थ **समस्या के समाधान का कथन।** इस प्रकार हाइपोथीसिस का शाब्दिक अर्थ हुआ–वह सम्भावित कथन जो समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। अर्थात् परिकल्पना उस समाधान को प्रस्तुत करती है जिसकी पुष्टि प्रदत्तों के आधार पर की जायें। इस प्रकार समस्या का समाधान बड़ी सुझ–बुझ के साथ प्रतिपादित किया जाता है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार :–

''परिकल्पना एक विचार युक्त कथन है जिसका प्रतिपादन किया जाता है और स्थायी रूप में सहीं मान लिया जाता है और अस्थायी रूप में सहीं मान लिया जाता है और निरिक्षण प्रदत्तों के आधार पर व्याख्या की जाती है जो आगे शोध कार्यो को निर्देशन देता हैं।''

टाउनसेंड के अनुसार :–

''परिकल्पना अनुसंधान की समस्या अथवा के प्रारम्भिक स्तर के लिए सुझाया गया हल है।''

मूले के अनुसार :–

''परिकल्पना एक अभिक्रम अथवा तर्क वाक्य हैं। जिसकी स्थिरता का परीक्षण उसकी अनुरूपता, उपयोग, अनुभवजन्य प्रभाव व पूर्ण ज्ञान के आधार पर करती हैं।''

परिकल्पना की प्रकृति :–

उपरोक्त सभी परिभाषाओं से परिकल्पना की प्रकृति का बोध होता है जो इस प्रकार से है :–

1. परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों का सामान्य या कारण प्रभाव सम्भावित सम्बंध प्रकट करती हैं।
2. परिकल्पना भविष्य की और संकेत करती है। अतीत से इसका सम्बन्ध नहीं होता हैं।
3. शोध की सभी क्रियाएं, परिकल्पनाएं निर्धारित करती है जिससे इसकी पुष्टि की जाती है वह वैज्ञानिक शोध तो बिना तो बिना इसके पूरे नहीं किये जा सकते।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट ''शैक्षिक अनुसंधान की विधियां, ''विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2008, पृ. सं. 86

4. परिकल्पना में क्रियात्मक पक्ष निहित होता है जिसका शोध मे नियोजन किया जाता हैं।

5. इसकी प्रकृति प्रत्ययात्मक होती है जिससे किसी भी तरह के प्रत्ययात्मक तत्वों का समावेश होता हैं।

3.8 परिकल्पना के उद्देश्य :–

परिकल्पना के निम्न उद्देश्य है :–

1. परिकल्पना शोध के लिये दिशा प्रदान करती हैं। उपयोगी प्रदत्तों के संकलन में सहायता प्रदान करती हैं।

2. परिकल्पना अध्ययनकर्ता को संवेदनशील बनाती है जिससे वह अनावश्यक परिस्थितियों तथा प्रदत्तों के संकलन से बच जाता है।

3. परिकल्पना द्वारा शोधकर्ता की समस्या को सही रूप में समझने में सहायता मिलती है तथा समस्या का रूप स्पष्ट हो जाता हैं।

4. परिकल्पना द्वारा शोध के निष्कर्षो के प्रतिपादन में सहायता मिलती हैं।

3.9 परिकल्पना का महत्व :–

शोध कार्य में परिकल्पना का विशिष्ट स्थान है। शोध की समस्त प्रक्रियाएं परिकल्पनाओं के चारों और केन्द्रित होती हैं परिकल्पना की पुष्टि से ही निष्कर्ष प्राप्त होते है। जो सिद्धान्त तथा प्रत्ययों का रूप ले लेते है तथा शोध से सम्बन्धित साहित्य का निष्कर्षो में सम्मिलित किया जाता है और शोध प्रक्रिया लगातार चलती रहती है। परिकल्पना के महत्व को निम्नलिखित प्रकार से देखते हैः–

1. परिकल्पना अनुसंधान की दिशा को स्पष्ट करती है फलस्वरूप शोधकर्ता को इधर–उधर नहीं भटकना पड़ता।

2. परिकल्पना तथ्यों की सार्थकता को निर्धारित कर रचनात्मक कार्यो के लिए प्रोत्साहित करती है।

3. परिकल्पना प्रदत्तों के संकलन के लिए आधार प्रस्तुत कर यह बताती है कि किस प्रकार के उपकरण, परीक्षण तथा प्रविधि आवश्यक है।

4. यह शोध निष्कर्षो के लिए आधार प्रदान करती है।

5. शोध परिकल्पनाएं नये शोध कार्यो के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

3.10 परिकल्पना की विशेषताएं :–

1. परिकल्पनाएं सरल एवं स्पष्ट होनी चाहिए।
2. परिकल्पना की प्रमाणिकता सिद्ध करने के लिए इसका आधार वैज्ञानिक होना चाहिए।
3. एक अच्छी परिकल्पना सिद्धान्त पर आधारित होती है।
4. परिकल्पना को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाना चाहिए।
5. एक अच्छी परिकल्पना में जिन आदर्शो को प्रस्तुत किया जाता है वे वैज्ञानिक हो, जिनसे कि परीक्षण करने पर वे कसौटी पर खरा उतरे।

3.11 परिकल्पनाओं के प्रकार :–

व्यवहार वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधानों में कई प्रकार की परिकल्पनाओं का प्रयोग करते है। विभिन्न विद्वानों ने कई प्रकार से उसका वर्णन व उल्लेख किया हैः–

गुड तथा हैट का वर्गीकरण

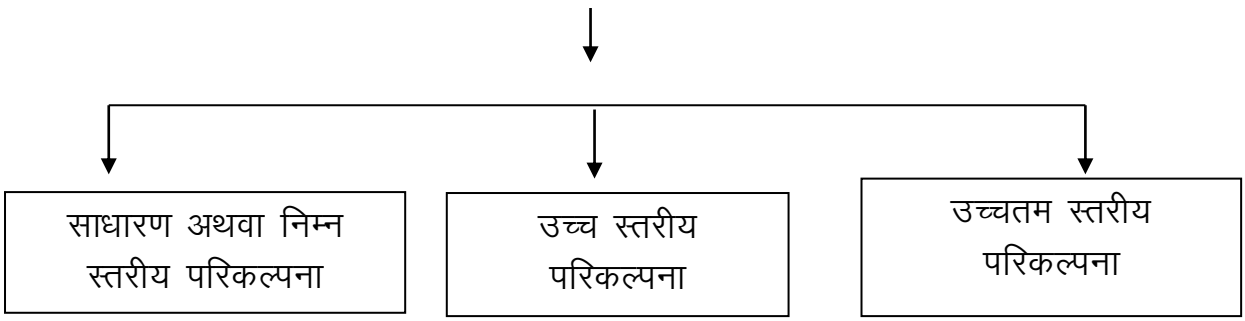

1. साधारण अथवा निम्न स्तरीय परिकल्पनाएं :–

इस प्रकार की परिकल्पनाएं केवल स्तर के अनुसंधानों में पाई जाती है तथा वे कुछ अनुभवाधीन समानताओं का ही वर्णन करती हैं।

2. उच्च स्तरीय परिकल्पनाएं :–

उच्च स्तरीय परिकल्पनाएं संकल्पनाओं के पारस्परिक सम्बन्धों पर आधारित होती है। इनमें समानताओं की अमूर्तता का स्तर उच्च स्तर का होता है। इस प्रकार की परिकल्पनाओं पर आधारित अनुसंधान का उद्देश्य घटनाओं का गहन अध्ययन होता हैं।

3. उच्चतम स्तरीय परिकल्पनाएं :–

इस स्तर की परिकल्पना में अमूर्त वैचारिकता का सबसे ऊंचा स्तर निहित रहता है। अतः इस स्तर के अनुसंधान सबसे अधिक जटिल होते है। परिकल्पना का कथन किस प्रकार किया गया है। इस दृष्टिकोण से इसके दो प्रकार पाये जाते हैः–

1. प्रश्न रूप परिकल्पना :–

प्रश्न का रूप परिकल्पना प्रश्न के रूप में होती है। जैसे–क्या ग्रह परिवेश बालकों के मनोवैज्ञानिक विकास को प्रभावित करता है? कुछ शोधकर्ता परिकल्पनाओं को प्रश्न के रूप में प्रस्तुत करना पसन्द करते हैं। अतः परिकल्पनाओं का निर्माण प्रश्न रूप में करते हैं।

2. घोषणात्मक परिकल्पना :–

प्रश्नरूप परिकल्पना में एक निश्चित कथन के रूप में होती हैं। घोषणात्मक परिकल्पना के घोषणा कथन में तथ्यों की अनुमानित घोषणा रहती हैं। इसलिए इन्हें घोषणात्मक परिकल्पना कहा गया है। एक अन्य दृष्टिकोण से परिकल्पनाओं में बांटा गया हैः–

3. प्रायोगिक परिकल्पना :–

प्रायोगिक परिकल्पना की मौलिक परिकल्पना व्यवहारिक परिकल्पना, सामान्य परिकल्पना, अनुभवगम्य परिकल्पना, विकल्प परिकल्पना भी कहते है। इन्हें प्रश्न या घोषणात्मक दोनों ही रूपों में व्यक्त किया जा सकता हैं।

4. शून्य परिकल्पना :–

शून्य परिकल्पना को दिशाहीन परिकल्पना भी कहते है। इसको नकारात्मक रूप में विकसित किया जाता है। चरों के सह सम्बन्ध को नकारात्मक कथन के रूप में लिखा जाता हैं। इसकी विशेषता यह है कि इनके लिये कोई सैद्धान्तिक आधार पर औचित्य प्रस्तुत करना नहीं होता हैं। यह शोधकर्ता को वस्तुनिष्ठ भी रखती हैं। इसको विकसित

करना सरल होता है। इस प्रकार परिकल्पना की सांख्यिकी विधियों द्वारा परीक्षण करते हैं। इसलिये इस परिकल्पना को सांख्यिकी परिकल्पना भी कहते है।

3.12 शोध में प्रयुक्त परिकल्पनाएं :–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
2. माध्यमिक स्तर के शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
4. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
5. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

3.13 न्यादर्श :–

किसी भी शोध में सबसे महत्वपूर्ण न्यादर्श होता हैं। क्योंकि किसी भी अनुसंधानकर्ता के लिये यह सम्भव नहीं है कि वह पूरे जनसंख्या के समग्र के सभी व्यक्तियों को अपनी खोज का विषय बना सके। इसलिये जनसंख्या में से कुछ व्यक्तियों चयन कर लिया जाता है जो कि समग्र के लिये चयनित व्यक्तियों को ऐसे समूह को न्यादर्श कहते है। न्यादर्श के अनके उपयोग है। पूरे समग्र की तुलना में न्यादर्श के उपयोग से समग्र की काफी बचत होती है। समय की मितव्ययता होने से अधिकतम अनुसंधानों में न्यादर्श लेकर ही अध्ययन करते हैं। इसमें इकाईयों की समग्र से काफी कम होती है जिससे विवेचन काफी सरल होता है। वैज्ञानिक रूप से लिये गये प्रतिदर्श पर आधारित परिणाम समग्र के परिणाम अनुरूप होते हैं।

3.14 न्यादर्श की परिभाषाएं :–

न्यादर्श को स्पष्ट करने के लिये कई विद्वानों ने अलग–अलग रूप से इसे परिभाषित किया है जो इस प्रकार से है :–

पी.वी. यंग के अनुसार :–

''एक सांख्यिकीय निदर्शन सम्पूर्ण समूह योग का एक लघुकृत आकार का चित्र है जिससे कि निदर्शन लिया जाता है।''

गुड एवं हॉट के अनुसार :–

''न्यादर्श एक विस्तृत समूह का छोटा प्रतिनिधि है।''

फ्रैंक येट्स के अनुसार :–

''न्यादर्श शब्द इकाईयों के एक समूह या सम्पूर्ण सामग्री के एक अंश के लिये सुरक्षित होना चाहिए। जिसको इस विश्वास के ऊपर चुना गया है कि वह सम्पूर्ण का प्रतिनिधि होगा।''

अतः उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि न्यादर्श समूह इकाई समूह में चुनी गई ऐसी इकाइयों का समूह है, जो समूचे इकाई का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करता हैं।

न्यादर्श के चयन की आवश्यकता :–

1. समय की बचत होती हैं।
2. अत्यधिक सत्यता का ज्ञान होता है।
3. मितव्ययी विधि हैं।
4. सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन सम्भव हैं।
5. विश्वसनीयता की सम्भावना अधिक रहती हैं।
6. प्रायोगिक अध्ययन में उपयुक्तता।

3.15 न्यादर्श के आवश्यक तत्व :–

एक उत्तम न्यादर्श वस्तुत वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत प्रतिनिधित्व चुना जाता हैं। इस प्रतिनिधित्व के माप द्वारा शोध अध्ययन के समय, शक्ति एवं धन की बचत की सम्भावना होती है। एक उत्तम न्यादर्श के आवश्यक तत्व निम्नलिखित हैः–

1. न्यादर्श अपनी समष्टि के अनुरूप होना चाहिए।

2. प्रतिदर्श की संख्या पर्याप्त होनी चाहिए।

3. उत्तम प्रकार के न्यादर्श का आधार यादृच्छिक होना चाहिए।

4. न्यादर्श द्वारा सूचना संकलन कार्य प्रत्येक इकाई से यथासम्भव समान परिस्थितियों में ही होना चाहिए।

5. सामान्य ज्ञान, तर्क तथा व्यवहारिक अनुभवों पर आधारि'त होना चाहिए।

6. न्यादर्श पक्षपात तथा मिथ्या सुझाव से मुक्त हो।

3.16 न्यादर्श के लाभ :–

1. न्यादर्श के द्वारा सर्वेक्षण की आर्थिक लागत कम हो जाती है।

2. न्यादर्श से वे प्रदत्त भी संभव हो पाते है जो समग्र के अध्ययन से संभव नहीं हो पाते।

3. प्रदत्तों व प्रतिक्रियाओं का सम्पादन व जांच सरल हो जाती हैं।

4. न्यादर्श में व्यक्तियों की संख्या कम होने से परीक्षणों के प्रशासन में सुविधा रहती हैं।

5. न्यादर्श के आधार पर एकत्रित आकड़ों का विश्लेषण तथा चित्रात्मक प्रदर्शन सम्भव व सरल होता है तथा निष्कर्षो की विवेचना सम्भावना सिद्धान्त के आधार की जा सकती हैं।

3.17 न्यादर्श की सीमाएं :–

न्यादर्श के लाभ होते हुए भी कुछ सीमाएं निम्नलिखित रूप में हैं:–

1. न्यादर्श पद्धति से कभी–कभी न्यादर्श त्रुटि का पूर्व कथन सम्भव नहीं होता हैं।

2. कहीं–कहीं समग्र जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक हो जाता है वहां न्यादर्श से काम नहीं चलता हैं।

3. इसके अलावा न्यादर्श में पक्षपात की संभावना बनी रहती हैं।

4. जनसंख्या के विषमजातीय होने पर न्यादर्श का चयन करना कठिन होता हैं।

5. जनसंख्या का स्वरूप सीमित होने पर न्यादर्श द्वारा अध्ययन पद्धति दोषपूर्ण हो जाती हैं।

6. न्यादर्श एक जटिल वैज्ञानिक पद्धति है। इसके लिए पर्याप्त तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती हैं।

7. न्यादर्श में समग्र के सही प्रतिनिधित्व की सदैव आवश्यकता बनी रहती है। शोधकर्ता की समग्र की यथेष्ट जानकारी के अभाव शोधकर्ता की समग्र की विशेषताओं की उपेक्षा तथा

न्यादर्श प्रविधियों के पर्याप्त ज्ञान के अभाव के कारण न्यादर्श में समग्र की पर्याप्त विशेषताओं का समावेश नहीं हो सकता।

3.18 न्यादर्श की विशेषताएं :–

1. न्यादर्श का पर्याप्त आकार होना चाहिए। न तो ज्यादा बड़ा और न ही ज्यादा छोटा होना चाहिए।
2. न्यादर्श अपने समग्र का उचित प्रतिनिधित्व करता हो।
3. न्यादर्श का चुनाव शोध के साधनों एवं उद्देश्यो के अनुसार होना चाहिए।
4. न्यादर्श सम्पूर्ण या समूहों के सभी आवश्यक एवं महत्वपूर्ण गुणों को यथासम्भव अभिव्यक्त करता हो।

3.19 न्यादर्श की विधियां :–

न्यादर्श में प्राप्त करने की अनेक विधियां विकसित की गई है। न्यादर्श में प्रतिनिधि एवं पर्याप्तता का गुण होने के लिये न्यादर्श को विशिष्ट विधियों द्वारा करना चाहिए। न्यादर्श की मुख्य दो विधियां प्रचलित हैं।

1. सम्भाव्यता न्यादर्श
2. असम्भाव्यता न्यादर्श

न्यादर्श के पारूप

सम्भाव्यता न्यादर्श

1. यादृच्छिक न्यादर्श
2. स्तरीकृत न्यादर्श
3. गुच्छ यादृच्छिक न्यादर्श
4. दिशा न्यादर्श
5. क्रमबद्ध न्यादर्श

असम्भाव्यता न्यादर्श

1. अंश न्यादर्श
2. सौउद्देश्य न्यादर्श
3. आकस्मिक न्यादर्श

3.20 शोध में प्रयुक्त न्यादर्श :–

शोधकर्त्री द्वारा शोध के उद्देश्यों व परिकल्पनाओं के आधार पर नागौर जिले की माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं (ग्रामीण व शहरी) की कुण्ठा परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन का न्यादर्श हेतु चयन किया गया हैं।

3.21 चर :–

अनुसंधान की अध्ययन रूपरेखा या अध्ययन विधि निर्धारित करने में चर अथवा चरों का बहुत महत्व हैं। चरों के ज्ञान चरों के मापन और चरों के नियंत्रण के अभाव में वैज्ञानिक अध्ययन करना संभव नहीं हैं। अनुसंधान समस्या के सम्बन्ध में परिकल्पनाओं के निर्माण के बाद अध्ययन की योजन बनाई जाती हैं।

यह अध्ययन की योजना वैज्ञानिक ढंग से तभी बनाई जाती है जब अनुसंधानकर्ता के चर और उनके नियंत्रण का पर्याप्त ज्ञान हो। चर को परिवर्ती और चल राशि कहते है। चर का शाब्दिक अर्थ है Vary करना या परिवर्तित करना।

3.22 चर की परिभाषा :–

गैरेट :–''चर वह लक्षण या गुण है जिसकी मात्रा मे परिवर्तन होता है यह परिवर्तन किसी माप या आयाम पर होता हैं।''

डी अमेटो :– ''चर किसी वस्तु घटना या प्राणी मापन योग्य गुण या लक्षण हैं।''

पोस्टमैन तथा ईगन के अनुसार :–''चर वह लक्षण या गुण है जिसके अनेक प्रकार के मूल्य होते हैं।''

व्यावहारिक तथा सामाजिक विषयों में न्यादर्श के चयन की प्रमुख समस्या होती है कि किस प्रकार न्यादर्श की ईकाईयों का जनसंख्या में से चयन किया जाये तो उनका प्रतिनिधित्व कर सके। सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना कठिन होता है जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का प्रतिबिम्ब रहता है। न्यादर्श का तात्पर्य सम्पूर्ण से अध्ययन के लिए ऐसी ईकाई को पृथक करना है जो सम्पूर्ण का प्रतिनिधित्व करती है तथा सम्पूर्ण की अपेक्षा छोटी हैं। न्यादर्श प्रविधि शोध कार्य को व्यावहारिक तथा समय, धन व शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती हैं।

चर मुख्यतः 5 प्रकार के होते है :–

1. स्वतंत्र चर :– यह वातावरण में क्रियाशील होकर व्यवहार को प्रभावित करता है। इसका मापन किया जा सकता है। इस चर से अन्य चर प्रभावित होते हैं।

2. आश्रित चर :– किसी भी चर का प्रभाव जिस चर के आधार पर ज्ञात किया जाता है उसे आश्रित चर कहते है। आश्रित चर का मान स्वतंत्र चर के मान पर आधारित होता हैं।

3. नियन्त्रित चर :– प्रयोगात्मक शोध कार्यो में प्रयोगात्मक चर का नियन्त्रित चर के रूप में अध्ययन किया जाता है। जिस पर की प्रभावशीलता सापेक्षिक होती है उसे नियन्त्रित चर कहते हैं।

4. परिमित चर :– परिमित चर का निरीक्षण शोधकर्ता इसलिए करता है कि जिससे शोध की परिस्थिति हो जाती है तथा सामान्यीकरण का क्षेत्र अधिक व्यापक हो जाता हैं।

5. मध्यस्थ चर :– मध्यस्थ चर का स्वरूप अमूर्त होता है इसलिए इसको समझ से ही पहचाना जा सकता है। शैक्षिक शोध में मध्यस्थ चर अधिक महत्वपूर्ण होता हैं।

3.23 अध्ययन में प्रयुक्त चर :– शोधकर्त्री ने अध्ययन में दो चर प्रयुक्त किये है–

1. स्वतंत्र चर – अध्ययन में स्वतंत्र चर के रूप में माध्यमिक विद्यालय की परिस्थितियों को चुना गया हैं।

2. परतंत्र /आश्रित चर – अध्ययन में आश्रित चर के रूप में अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थिति को चुना गया हैं।

अध्ययन में न्यादर्श

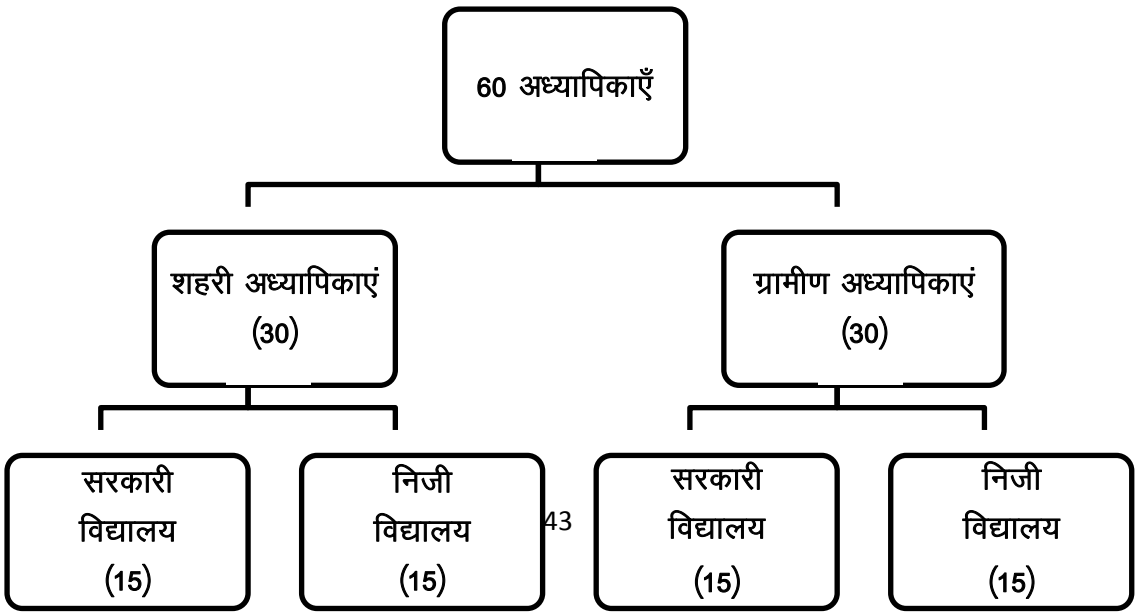

3.24 अनुसंधान की विधियाँ :–

अनुसंधानकर्ता अनुसंधान कार्य के लिए जिस विधि का प्रयोग करती है। वह समस्या की प्रकृति पर निर्भर करती है। यदि समस्या की प्रकृति ऐतिहासिक है तो उसे ऐतिहासिक अनुसंधान कहेगें। यदि समस्या की प्रकृति वर्णनात्मक है तो उसे वर्णनात्मक अनुसंधान और यदि समस्या की प्रकृति प्रयोगात्मक है तो उसे प्रयोगात्मक अनुसंधान कहेगें।

इस प्रकार विभिन्न प्रकार की समस्याओं की प्रकृति के ऊपर निर्भर है कि अनुसंधान कैसा होगा, अथवा उसकी विधि क्या होगी।

जार्ज जे. मूले ने अनुसंधान को तीन मौलिक रूपों में विभाजित किया है जो निम्नलिखित प्रकार से हैः–

शोध विधि

↓

सर्वेक्षण विधि | ऐतिहासिक विधि | प्रयोगात्मक विधि

1. सर्वेक्षण विधि :–

यह विधि वर्तमान व प्रयत्नों से सम्बन्धित है जो अनुसंधान के अन्तर्गत घटना तथा तथ्य की स्थिति को निर्धारित करते है। इस विधि को पुनः चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया हैः–

(1) विवरणात्मक विधि :–

विवरणात्मक अनुसंधान के तीन प्रकार हैः–

(अ) सर्वेक्षण परीक्षण विधि

(ब) प्रश्नावली सर्वेक्षण विधि

(स) साक्षात्कार सर्वेक्षण विधि

(2) विश्लेषणात्मक विधिः–

विश्लेषणात्मक अनुसंधान के पांच प्रकार है।

(अ) आलेखी आवृति

(ब) प्रक्षेण आवृति

(स) मापनी सर्वेक्षण

(द) आलोचनात्मक घटना

(य) कारक विश्लेषण

(3) विद्यालय सर्वेक्षण

(4) सामाजिक सर्वेक्षण

2. ऐतिहासिक विधि :–

यह विधि अतीत से सम्बन्धित है। इसमें अतीत के अवशेष तथा तथ्यों के आधार पर वर्तमान को समझने का प्रयास किया जाता है। ऐतिहासिक विधि को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है।

3. प्रयोगात्मक विधि :–

यह घटनाओं के मूलभूत सम्बन्धों की खोज के आधार पर भविष्यवाणी करने और उनके उद्‌गम के नियन्त्रण में प्रयोग की जाती है। प्रयोगा–त्मक विधि को चार वर्गो में विभाजित किया जाता है।

(अ) साधारण प्रायोगिक स्वरूप

(ब) बहुस्तरीय विश्लेषण

(स) वैयक्तिक अध्ययन

(द) भविष्य सम्बन्धी अध्ययन

अतः शोधकर्त्री को विषय की समस्या को भली प्रकार समझकर व अध्ययन से सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन करके परिकल्पनाओं को ध्यान में रखते हुए शोध हेतु निष्कर्ष निकालने एवं उनकी व्याख्या करने के लिए उपर्युक्त शोध विधि का चयन करना होगा ।

3.25 अनुसन्धान में प्रयुक्त विधि :–

अनुसन्धान में अनेक विधि साक्षात्कार, अवलोकन विधि, प्रयोगत्मक आदि विधियों का प्रयोग किया जाता है तथा शोधकर्ता किस विधि का चयन करेगा यह शोध समस्या पर निर्भर करता है । यदि शोधकर्ता अपनी विधि की व्याख्या स्पष्ट रूप से नही कर सकता है तो परिणामों को अत्यधिक एवं सामान्य बने रहनें की सम्भावना बनी रहती है । क्योकि शोधकर्ता शोध विधि के द्वारा ही आंकडो का संकलन करता है । अतः समस्या के आंकडे तैयार करने हेतु तथा शोधकार्य को वैज्ञानिकता प्रदान करने हेतु अनुसंधानकर्ता आवश्यक रूप से कुछ विधियां, प्रविधिया एवं उपकरणो के लिए शैक्षिक अनुसंधान की विधियों में सर्वेक्षण विधि का चयन किया है। शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन की प्रकृति को देखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया है ताकि सही परिणाम प्राप्त हो सके।

3.26सर्वेक्षण विधि का अर्थ :–

सर्वेक्षण विधि को अग्रेंजी **Survey method** में कहा जाता है। **Survey** दो शब्दों **Sur+vey** से मिलकर बना है। **Sur** अर्थ है **Over** तथा **vey** का अर्थ **To look** होता है। अर्थात् ऊपर की और देखना। इस प्रकार सर्वे का अर्थ अवलोकन या अन्वेषण से होता है। जिसका उद्देश्य एक क्षेत्र को किसी एक स्थिति अथवा उसे प्रचलन के सम्बन्ध में अर्थात् सूचना प्रदान करना होता है। सर्वेक्षण विधि उन वर्तमान तथ्यों का उद्घाटन करती है जो समस्या में निहित है इस विधि से तथ्य का निष्कर्ष निकालने व उनकी व्याख्या करने के लिये न केवल अपेक्षित प्रश्नों का उतर ही प्राप्त होता है बल्कि समस्या से सम्बन्धित तथ्यों की वर्तमान स्थिति भी स्पष्ट हो जाती हैं।

3.27 सर्वेक्षण विधि की परिभाषाएं :–

ट्रेवर के अनुसार :–

सर्वेक्षण विधि वर्तमान कार्यो की प्रकृति को निश्चित करने की विधि हैं।''

एम.एल. ठिहटनी के अनुसार :–

''सर्वेक्षण आधुनिक सामाजिक विज्ञान की शब्दावली के अनुसार एक प्रकार का व्यवस्थित प्रयास है। जिसमें कि वर्तमान सामाजिक संस्थानों के स्तर समूह तथा क्षेत्रों के सम्बंध में विवेचन व्याख्या आदि से सम्बन्धित बातों का उल्लेख किया जाता है।''

उपरोक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता है सर्वेक्षण विधि से सर्वेक्षण द्वारा सूचनाएं एवं गणनाओं को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसलिये यह विधि बहुत उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हैं।

3.28 सर्वेक्षण के उद्देश्य :–

1. सूचनाओं का संकलन करना।
2. किसी विशिष्ट कारक का पता लगाना।
3. किसी व्यवहार या घटना का पूर्वानुमान लगाना।
4. दो चरों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध का पता लगाना।

3.29 सर्वेक्षण विधि की विशेषताएँ :–

(1) प्रस्तुत विधि द्वारा सकंलन प्रभाव विश्वसनीय संख्या में दिये जाते है।

(2) यह विधि समस्त जनसंख्या की सामान्य सांख्यिकी से सम्बन्धित है।

(3) यह विधि गुणात्मक व परिमाणात्मक दोनों ही हो सकती है।

(4) इसमें तथ्यों का वर्णन शब्दों व अंको व गणितीय संकेतो में व्यक्त किया जाता है।

(5) सर्वेक्षण का सम्बन्ध व्यक्ति विशेष से नहीं होता है।

3.30 सर्वेक्षण विधि के प्रकार :–

सर्वेक्षण विधि के वर्गीकरण हेतु तीन मापदण्ड निर्धारित हैः–

(अ) चर की प्रकृति

स्तरीय सर्वेक्षण

सर्वेक्षण अनुसंधान

(ब) वर्ग या समूह जो मापे जा सकते है।

न्यादर्श

जनसंख्या

(स) आंकड़ो के संकलन के स्त्रोत–

प्रश्नावली

साक्षात्कार

3.31 सर्वेक्षण विधि के सोपान :–

(1) उद्देश्यों का निर्धारण

(2) उपकरणों एवं प्रविधियों का चयन

(3) उपकरणों प्राक परीक्षण

(4) प्रतिदर्श का चयन

(5) सर्वेक्षण कार्य की विधियों का निर्धारण

(6) दंत सकंलन एवं विश्लेषण

3.32 सर्वेक्षण विधि के लाभ :–

सर्वेक्षण विधि के लाभ निन्नलिखित हैः–

(1) सर्वेक्षण अध्ययन वर्तमान स्थितियों, स्तरों तथा समस्याओं का अध्ययन करने के लिए उपयुक्त है।

(2) सर्वेक्षण अध्ययन भावी विकास के क्रम या प्रवृतियों का पूर्वानुमान देता हैं। यह वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं की ओर प्रभावी रूप से ध्यान आकर्षित करने की क्षमता रखते है।

(3) इन अध्ययनों के लिए वांछित उपकरण सरल तथा उपयोगी होते है। इसका प्रयोग व प्रशासन सरल होता है।

(4) आवश्यक उपकरणों के माध्यम से संग्रहित प्रदतों का विश्लेषण तथा व्याख्या सरल होती है इनसे सहज ही निष्कर्ष निकाले जा सकते है।

(5) इस प्रकार के अध्ययनों के लिए उपकरणों का विकास व निर्माण करना भी अधिक कठिन नहीं है।

(6) सर्वेक्षण में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया जाता है और उसी के द्वारा संकलित तथ्यों का विश्लेषण, वर्गीकरण, मूल्याकंन, सामान्यिक आदि किया जाता है।

(7) इस प्रकार क अध्ययनों के द्वारा कारण–प्रभावों के मध्य सहज ही सम्बन्ध स्थापित किये जा सकते है। इनमें कई प्रकार के कारणात्मक सम्बन्धों प्रयोगात्मक तथा निंयत्रित शोध अध्ययन किये जा सकते है।

3.33 सर्वेक्षण विधि की सीमाएँ :–

सर्वेक्षण विधि के लाभ के साथ–साथ कुछ सीमाएँ भी है जो निम्न प्रकार हैः–

(1) सर्वेक्षण प्रायः असम्बद्ध एवं बिखरे होते है अतः इन्हें पूर्व रूप से संकलित करके किसी सिद्धान्त का निर्माण नहीं किया जा सकता है।

(2) सर्वेक्षण विधि से समाज के एक अंश का अवलोकन हो पाता है इसमें समस्त सत्य का समझना मुश्किल है।

(3) सर्वेक्षण विधि से ऐसी सूचनाएं प्राप्त नहीं होती जिनसे तथ्यों का गहराई से अध्ययन हो सके।

(4) सर्वेक्षण विधि में घटना का दृष्टिगोचर होना आवश्यक है लेकिन अनुसन्धानकर्ता वहाँ उपस्थित हो ऐसा आवश्यक नहीं है क्योंकि कुछ घटनाएँ जीवन से सम्बन्धित होती है उन्हें कोई देख नहीं सकता। अतः पूछताछ करके ही काम चलाना पड़ता है। कई बार लोग इनके बारे में असत्य बोलते है इसलिए यह विधि पूर्ण विश्वसनीय नहीं हो सकती है।

(5) सर्वेक्षण में अभ्यार्थियों के गलत या सामाजिक रूप से मान्य उत्तर देने की संभावना होती है।

(6) सर्वेक्षण विधि में शोधकर्ता को अधिक सर्तक, प्रशिक्षित तथा शोध क्षेत्र का जानकार होना चाहिए।

यद्यपि सर्वेक्षण विधि में अनेक त्रुटियां व कमियाँ है फिर भी अनुसंधान के क्षेत्र में इसका अपना अलग महत्व है। अनेकानेक तात्कालिक समस्याओं पर उचित सूचना तथा तथ्य इसी के माध्यम से प्राप्त किये जा सकते है। विभिन्न उपकल्पनाओं का सत्यापन तथा सिद्धान्तों का परीक्षण भी इस सिद्धान्त विधि द्वारा सम्भव है।

3.34 उपकरण :–

अनुसंधान प्रक्रिया की एक और महत्वपूर्ण कड़ी अनुसंधान सामग्री का सग्रंह है अनुसंधान उद्देश्यों की पूर्ति व परिकल्पनाओं का परिक्षण उपयुक्त एवं सम्बन्धित सूचनाओं

एवं सामग्री के विश्लेषण पर निर्भर करता है। प्रत्येक अनुसंधान में ऐसे कितने ही चर कितनी ही ऐसी परिस्थितियां एवं घटनाएं समाहित रहती है। जिनके विषम में विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त करना, उनका मापन एवं मूल्यांकन करना अनिवार्य होता है। यह जानकारी अनेक उपकरणों एवं विधियों के द्वारा प्राप्त की जाती है तथा उपकरणों की विश्वनीयता, वैद्यता एवं वस्तुनिष्ठता क्या है? इसका ज्ञान होना चाहिए। किसी भी समस्या हेतु नवीन एवं अज्ञात तथ्यों का संकलन करने मे सहायक साधनों को शोध उपकरण कहते है। अनुसंधान हेतु अनेक उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। उपकरण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए सुखिया एव मल्होत्रा ने लिखा है–''किसी समस्या के अध्ययन हेतु नवीन एवं अज्ञात दत्त संकलन के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नवीन दत्त संकलित करने हेतु कई यंत्रों की आवश्यकता होती है, इन्ही यंत्रों को उपकरण कहते हैं।''

विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए भिन्न–भिन्न प्रकार के उपकरण प्रस्तुत किए जाते है। अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसंधानकर्ता इन उपकरणो का प्रयोग कर सकता हैं।

3.35 उपकरण के प्रकार :–

(1) मानकीकृत उपकरण

(2) स्वनिर्मित उपकरण

1. मानकीकृत उपकरण :–

मानकीकृत उपकरण अपेक्षाकृत अधिक मान्य व वैज्ञानिक होते है। ये वे साधन है जिन्हे परीक्षण द्वारा मनोवैज्ञानिक शिक्षा, शास्त्रियों, अनुसंधान संस्थाओं आदि के द्वारा अनेक अन्वेषणों की सहायता से बड़े समूह पर प्रशासित किया जाता है और इनकी वैद्यता, विश्वसनियता, मानको को ज्ञात कर लिया जाता हैं इनकी प्रशासन प्रक्रिया सुनिश्चित होती है।

2. स्वनिर्मित उपकरण :–

अमानकीकृत उपकरणों का निर्माण शोधकर्ता द्वारा समस्या के अनुसार स्वयं अपने अनुभव सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन, संबंधित उद्देश्यों तथा अध्यापकों के सहयोग के

आधार पर करते है। इन उपकरणों के निर्माण क बाद वह उसकी विश्सनीयता, वैद्यता ज्ञात करता है। तत्पश्चात् उन्हें प्रयोग में लाता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया है।

3.36 शोध में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित परीक्षण प्रश्नावली बनाया गया है जिनमें नागौर जिले की माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं (ग्रामीण एवं शहरी) की कुण्ठा परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

3.37 प्रश्नावली :–

किसी भी अनुसंधान में आंकड़ो के सकंलन करने में यह महत्वपूर्ण उपकरण है। इसमें अनेक प्रश्नों का समूह होता है। प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची है जो अध्ययन समस्या के सम्बन्ध में बनायी जाती है और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाईयों से तथ्यों का संकलन करके अध्ययन समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है।

3.38 प्रश्नावली की परिभाषाएँ :–

प्रश्नावली की परिभाषा अनेक विद्धानों ने निम्न रूप में परिभाषित की है :–

1. गुड तथा हांट (1952) के अनुसारः–

सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ प्रश्नों क उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से है जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता है, जिसे उतरदाता स्वयं भरता है।

2. सिन–पाओ यंग (1953):–

अपने सरलतम रूप में प्रश्नावली प्रश्नों की वह अनुसूची है, जिसे कि अनुसूचित या सर्वेक्षण प्रतिदर्श के रूप में चुने हुए व्यक्तियों के पास डाक द्वारा भेजा जाता है। इसकी सहायता से बढ़े और विस्तृत लोगों के समूहों से शीघ्र और सरलता से सूचना एकत्रित की जाती है।

3. वान डेलेन के अनुसार –

''प्रश्नावली एक उपकरण है जो शिक्षा क्षेत्र में कार्य करने वालों के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों व क्रियाओं के बारे में तथा अभिवृति व मत को जानने के लिए व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता हैं

3.39 प्रश्नावली की विशेषताएँः–

प्रश्नावली की निम्नलिखित विशेषताएं हैः–

(1) प्रश्नावली में प्रश्नों की भाषा एवं शब्दावली स्वष्ट होती है।

(2) प्रश्नावली में प्रश्नों के उत्तर सूचनादाता को लिखना पड़ता है।

(3) प्रश्नावली द्वारा साक्षात्कार से उत्पन्न दोषो से बचा जा सकता है।

(4) पर्याप्त समय लिखने से व्यक्ति सोच समझकर उत्तर लिख सकते हैं

(5) प्रश्नावली द्वारा शीघ्र सूचना प्राप्त होती है।

3.40 प्रश्नावली विधि के लाभ/आवश्यकता

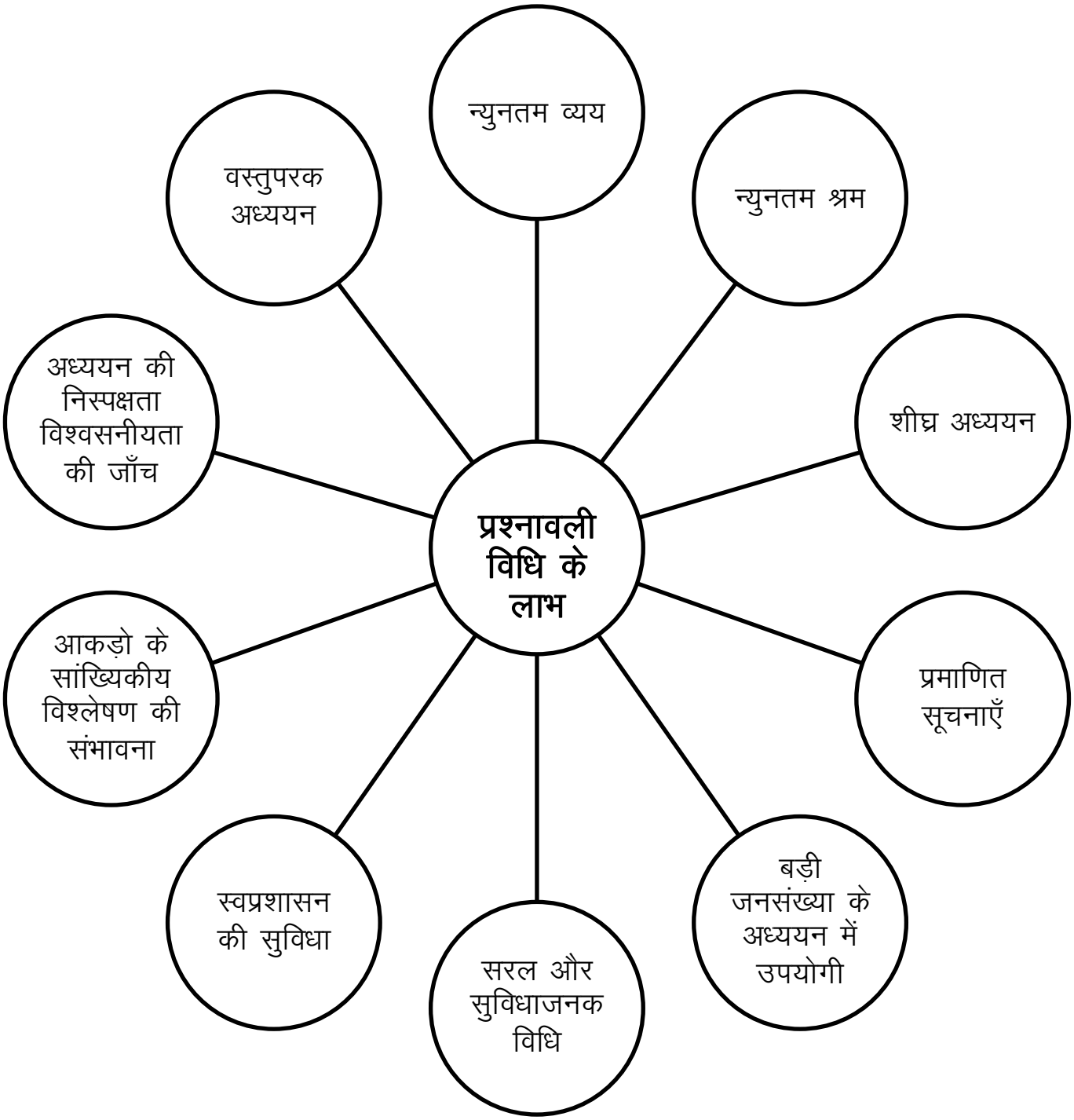

3.41 प्रश्नावली की सीमाएँ :–

प्रश्नावली के लाभ होते हुऐ भी कुछ सीमाएं है जो इस प्रकार है।

1. शोधकर्ता का पक्षपात पूर्ण दृष्टिकोण ।
2. निर्देशन के लिए अनुपयोगी ।
3. गहन व विस्तृत अध्ययन के लिए अनुपयोगी ।
4. विभिन्न व्यवहारिक कठिनाईयाँ ।

3.42 अंकीकरण :–

इस प्रश्नावली के प्रत्येक आयाम में अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों से सम्बन्धित 5–5 प्रश्न कुल 25 प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न का 5 अंक है। प्रत्येक प्रश्न के 5 रेटिंग स्केल है। ऋणात्मक प्रश्न में पूर्णतः असहमत, अनिश्चित, निश्चित, असहमत, सहमत के लिए क्रमशः 1,2,3,4,5 तथा सकारात्मक प्रश्न में क्रमशः 5,4,3,2,1 अंक निर्धारित किये है। और कुण्ठा परिस्थिति मापनी में कुल 25 प्रश्नो में से 14 प्रश्न सकारात्मक है तथा 11 प्रश्न ऋणात्मक प्रश्न है।

3.43 प्रविधियाँ :–

प्रविधि से तात्पर्य खास तरीके से सुचनाएँ प्राप्त करने से है। शोधकर्ता में विशेष योग्यता होने पर ही पूर्ण एवं सार्थक सूचनाएँ एकत्रित कर सकता है अथवा नहीं। शोधकर्त्री ने अपने अध्ययन में सांख्यिकी प्रविधियों कों चुना है।

3.44 उपकरण का विवरण एवं प्रशासन :–

शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थिति मापनी (परीक्षण) का प्रयोग किया गया है।

परीक्षण विवरण :–

प्रस्तुत शोध कार्य में उपकरण स्वनिर्मित है। इस उपकरण कें माध्यम से माध्यमिक विधालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं (ग्रामीण एवं शहरी) की कुण्ठा परिस्थितियों का

तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इस परीक्षण में कुण्ठा परिस्थितियों से संबधित मापनी में आयाम बनाये गये है। जिनमें कुल प्रश्नो की संख्या 25 है।

कुण्ठा परिस्थिति मापनी (प्रश्नावली) अंक= 125

क्र.स.	आयाम	कथन का प्रश्नावली क्रमांक	कुल कथन संख्या
1.	विद्यालय शिक्षण संबधी परिस्थितियां	1, 2, 3 ,4, 5	5
2.	विद्यालय उच्च परिस्थितियां	6, 7, 8, 9, 10	5
3.	सामाजिक /नैतिक	11, 12, 13, 14, 15	5
4.	परिवारिक	16, 17, 18, 19, 20	5
5	राजनैतिक	21, 22, 23, 24, 25	5
	योग		25

प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक निर्धारित हैं।

3.45 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

परीक्षण की सहायता से सग्रंहित किये गये आंकड़ो से प्राप्त सुचनायें जटिल असम्बद्ध तथा बिखरे रूप में होते है। उचित विवेचन के लिए सामग्री को संग्रहित करना आवश्यक होता है। इसके लिए सांख्यिकी विधी का प्रयोग किया जाता है। सांख्यिकी प्रविधी शोध कों आधार प्रदान करती है। किसी भी परीक्षण के निष्कर्ष के लिए सांख्यिकी की आवश्यकता होती है। ये अनुंसधानकर्ता की परिकल्पनाओं का परीक्षण करती है जिसके लिए परिकल्पनाएँ कहाँ तक ओर प्राप्त तथ्यों का सारांश निकालकर उसे वास्तविक विचार व्यक्त करने के योग्य बना देती है। आज के युग में हम मनुष्य को विभिन्न क्षमताओं के विकास को भावी प्रकार से मापन करने में सक्षम हो जाते है। इसी के आधार पर मापन मे सांख्यिकी का अपना महत्व है।

3.46 सांख्यिकी की परिभाषा :–

1. **प्रो. बाडले अनुसार** – ''सांख्यिकी एक ऐसा शास्त्र है जो सामाजिक जीवन की रचना की क्रियाओं का उसकी समस्त प्रवृतियों में अध्ययन करता है।''

2. **विलियम किंग कें अनुसार** –''सांख्यिकी संग्रहित तथ्यो के विश्लेषण अथवा अनुमान के संकलन द्वारा प्रदत सामूहिक या सामाजिक घटनाओं के अध्ययन करने का ढंग है।''

3. **फर्ग्युसन के अनुसार** :– ''सांख्यिकी का सम्बन्ध सर्वेक्षणों ओर परीक्षणों द्वारा प्रदत करने वाली सामग्री के सकंलन, वर्गीकरण और व्याख्या से है।''

3.47 सांख्यिकी का अर्थ :–

सांख्यिकी शब्द को अंग्रेजी भाषा में **Statistic** कहा जाता है। **स्टेटिक्स** लेटिन भाषा के शब्द **स्टेटस** या इटली भाषा के शब्द **स्टेटिस्टा** से बना है। इसका प्रयोग आरम्भ में जन्म–मरण की संरचनाओं के विवरण का लेखा रखने के लिए किया गया था। परन्तु धीरे–धीरे यह राजनीतीक विषय ही नही रहा । इसका प्रयोग राज्य की आर्थिक व सामाजिक समस्याओ व परिस्थितियो तक फेल गया । वर्तमान में सांख्यिकी का प्रयोग विज्ञान, गणित, शिक्षा मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र आदि सभी ज्ञान क्षेत्रों में होता है।

3.48 सांख्यिकी की आवश्यकता : –

सांख्यिकी का ज्ञान प्रत्येक शोधकर्ता को होना आवश्यक है।

1. मार्गदर्शन की प्रक्रिया का आधार सांख्यिकी होता है।

2. प्रयोग तथा शोध कार्य सांख्यिकी का प्रयोग के अभाव में विश्वसनीय एवं प्रमाणित नही होता है। अनुसधांन तथा प्रयोग की व्याख्या होना आवश्यक है।

3.49 सांख्यिकी का महत्व :–

शोध कार्य में सांख्यिकी का महत्व निम्नलिखित है।

1. सांख्यिकी में किसी परीक्षण के पद विश्लेषण करने में सहायता मिलती है। इसके प्रत्येक पद का विभेदकारी मान ओर सरलतम मान तथा कठिनतम मान निकाला जाता है।

2. सांख्यिकी के द्वारा परीक्षण की वैधता एवं विश्वसनीयता का पता चलता है।

3. शिक्षा समस्याओं की व्यवस्था निपुणता की तुलना इन सांख्यिकी मापों के द्वारा की जाती है।

4. सांख्यिकी के द्वारा एक का संम्बन्ध अन्य विषयो के साथ निकालकर यह जान सकते है कि विषयो में आपस में कितनी समानताएँ है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री प्राप्त आकड़ो का विश्लेषण करनें के लिए सांख्यिकी के अन्तर्गत मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा 'T' Test का प्रयोग किया है।

1. मध्यमान :–

मध्यमान प्राप्तांको का केन्द्रिवर्ती मान होता है जो अन्य सभी बातों का प्रतिनिधित्व करता है। तथा पूरे शहर की विशेषताओं को बतलाता है।

सूत्र –

$$\overline{X} = \frac{\sum x}{N}$$

संकेताक्षर $\overline{X}$ = मध्यमान

$\sum x$ = पदों का योग

N = पदों की सख्या

2. प्रमाणिक विचलन

सूत्र – $SD = \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$

संकेताक्षर – SD = मानक विचलन

$\sum d^2$ = मध्यमान से प्राप्त विचलनों के वर्गो का योग

N = पदों की संख्या

3. 'टी' मान परीक्षण

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{(\sigma_1)^2}{N_1} + \frac{(\sigma_2)^2}{N_2}}}$$

संकेताक्षर –

M_1	=	प्रथम समूह का विचलन
M_2	=	द्वितीय समूह का विचलन
N_1	=	प्रथम समूह की संख्या
N_2	=	द्वितीय समूह की संख्या
$\sigma 1$	=	प्रथम समूह का प्रमाणिक विचलन
$\sigma 1$	=	द्वितीय समूह का प्रमाणिक विचलन

चतुर्थ अध्याय

तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना :–

शोध परीक्षण के प्रशासन एवं अंकन के प्रथम प्रदत्त तब तक अर्थपूर्ण नहीं होते जब तक कि उनको कुछ सांख्यिकी विश्लेषण नहीं दिया जाता हैं। प्रदत्तों के विश्लेषण का अर्थ प्राप्त प्रदत्तों को अर्थपूर्ण बनाना है अथवा उपयुक्त सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा परिणामस्वरूप करना है। सार्थक परिणामों को प्राप्त करने के लिये प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण की सहायता से परिकल्पना का परीक्षण किया जाता हैं।

किसी भी शोध कार्य में विभिन्न उपकरणों के माध्यम से संकलित किये गये अधिकांश तथ्य चाहे कितने वैद्य तथा उपयुक्त क्यों न हो, तो भी वे अव्यवस्थित होते हैं। इनकी प्रयोजनशीलता एवं उपयोगिता कार्य में प्रयुक्त होने से पूर्व सुव्यवस्थित एवं सुंसगठित अर्थात् सम्पादित वर्गीकृत एव सारणीबद्ध करने की आवश्यकता होती हैं।

सम्पादन के अन्तर्गत एकत्रित तथ्यों की शुद्धता, उपयोगिता एवं पूर्णता हेतु जांच करनी चाहिये। वर्गीकरण के द्वारा सूचनाओं को विभिन्न उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों से कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। जब तक कि सारणी के आधार पर उसका विश्लेषण न किया जायें।

डॉ कौल के अनुसार :– ''आकड़ों के विश्लेषण से तात्पर्य तथ्यों का इस प्रकार से अध्ययन करने से है कि उन आकड़ों में निहित तथ्यों के विश्लेषण के माध्यम से खोज हो सके।''

पी.वी. यंग के अनुसार :–''वैज्ञानिक विश्लेषण की यह धारणा है कि एकत्र तथ्यों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण व भेद खोलने वाली बात कुछ भी है यदि सुव्यवस्थित तथ्यों के सारे अध्ययन से जोड़ा जाये तो उनका महत्वपूर्ण सामान्य अर्थ प्रकट हो जाता है जिसके द्वारा प्रामाणिक व्याख्याएं निकाली जाती हैं।''

डब्ल्यू. आंइकिंग के अनुसार :– ''सांख्यिकी पद्धति प्रणाली है जिसमें सामूहिक रूप से भौतिक व सामाजिक घटनाओं का अध्ययन गणना तथा अनुमान के आधार पर संकलन अंको के विवेचन द्वारा प्राप्त फल के आधार पर किया जाता हैं।''

अतः इन तथ्यों से तात्पर्य है कि अनुसंधान या शोधकार्य में केवल तथ्यों को एकत्रित कर लेने से ही वास्तविक अर्थ स्पष्ट नहीं होता है बल्कि शोधकार्य के लिए यह आवश्यक है कि

एकत्र तथ्यो को सुव्यवस्थित करके उनका विश्लेशण व व्याख्या की जाये ताकि विषय के संबंध में सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हो । तथ्यों का वर्गीकरण व सारणीयन कर देने से बिखरे हुए तथ्यो को ढेर के एक क्रमबद्ध व्यवस्थित व संक्षिप्त रूप मिल जाता है जिसके कारण इन्हें समझाना सरल हो जाता हैं।

4.2 सारणीयन :–

संमको के वर्गीकरण के पश्चात् उन्हे सही रूप से समझने के लिए संमको की सारणी बनायी जाती है इससे अध्ययन में सुगमता आती हैं।

4.3 सारणीयन का अर्थ व परिभाषा :–

वर्गीकरण के पश्चात् सांख्यिकी सामग्री को सारणीयों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार वर्गीकरण सारणीयन का आधार है। जैसा वर्गीकरण होता है, उसी के अनुरूप सारणीयन भी करना पड़ता है यदि वर्गीकरण बहुमुखी तथा जटिल है तो सारणी वैसी होगी। सारणीयन द्वारा एकत्रित सामग्री को सरल, संक्षिप्त तथा सुबोध बनाया जाता हैं।

कॉनर के अनुसार :– ''सारणीयन किसी विचाराधीन समस्या को स्पष्ट करने के उद्देश्य से किया जाने वाला सांख्यिकीय तथ्यों का क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रस्तुतीकरण हैं।

4.4 सारणीयन के उद्देश्य :–

1. तथ्यों को संक्षिप्त रूप प्रदान करना।
2. तथ्यों को तुलनीय बनाना।
3. तथ्यों को स्पष्ट तथा बोधगम्य बनाना।
4. सांख्यिकी विवेचन में सहायक।
5. विशेषताओं का प्रदर्शन करना।

उत्तम सारणी के गुण :–

1. आकर्षकता :– एक सारणी के आकर्षक होने के लिए उसके खानों का समानुपातिक होना, संख्याओ के लिखने का ढंग, स्वच्छता तथा लेख की सुंदरता आदि आवश्यक तत्व हैं।

2. समुचित आकार :– एक स्तरीय सारणी का आकार समुचित होना चाहिए आकार न बड़ा न अधिक छोटा होना चाहिए।

3. स्पष्टता तथा सरलता :– एक उत्तम सारणी का स्पष्ट तथा सरल होना परम आवश्यक है जिससे हम आवश्यक संमको को तुरन्त खोज सकें।

4. तुलना की सुविधा :– एक उच्च स्तर की सारणी में तथ्यों को इस प्रकार व्यवस्थित रूप से प्रदर्शित किया जाना चाहिए कि उनकी तुलना में सुविधा हो।

5. वैज्ञानिकता :– इसका आशय यह है कि सारणी निर्मित करते समय वैज्ञानिक माध्यम अपनाना चाहिए न कि मनमाना ढंग क्योंकि वैज्ञानिक विधि से निर्मित सारणी निश्चय ही उपयोगी होती हैं।

सारणी के प्रकार :–

सारणी का दो आधारों पर वर्गीकरण किया गया है :–

1. उद्देश्य के आधार पर

अ. सामान्य उद्धेश्यीकरण सारणी

ब. संक्षिप्त सारणी

2. रचना के आधार पर

अ. सरल सारणी

ब. जटिल सारणी

4.5 सारणीयन की सीमाएं :–

सारणीयन की सीमाएं निम्नलिखित है :–

1. सारणीयन में मात्र संमक होते है उनका विवरण नहीं होता है अतः केवल उन्हीं तथ्यों से सांख्यिकीय विवेचन नहीं किया जा सकता हैं।

2. सारणियों को समझने के लिए अंको का उच्च ज्ञान होना आवश्यक हैं इसलिए साधारण ज्ञान रखने वालो के लिए सारणी के अंको के मेल को समझना बहुत कठिन हैं।

उपयुक्त सीमाओं के कारण सारणियों की उपयोगिता एक वर्ग विशेष या उच्च ज्ञान रखने वाले व्यक्तियों तक सीमित रह जाती हैं।

शोधकार्य में विभिन्न उपकरणों की सहायता से प्राप्त सूचनाओं एवं प्रदत्तों से कोई निर्णय तब तक नहीं निकला जा सकता जब तक कि सारणी के आधार पर विश्लेषण एवं व्याख्या नहीं की जाए। अतः प्रत्येक परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए विभिन्न तथ्यों को सारणीबद्ध किया है। तत्पश्चात् उसकी व्याख्या एवं विश्लेषण किया गया हैं।

4.6 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

परिकल्पना संख्या – 1

माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता।

सारणी संख्या 4.1

समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (σ)	टी मान (t)	सार्थकता का स्तर
शहरी क्षेत्र की अध्यापिकाएँ	30	79.7	6.15	2.07	0.05 स्वीकृत
ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाएँ	30	76.23	6.80		0.01 स्वीकृत

df = (N_1+N_2 – 2) (30+30 – 2 =58) 0.05=2.00 एवं 0.01=2.66

मध्यमान –ग्राफ संख्या –4.1

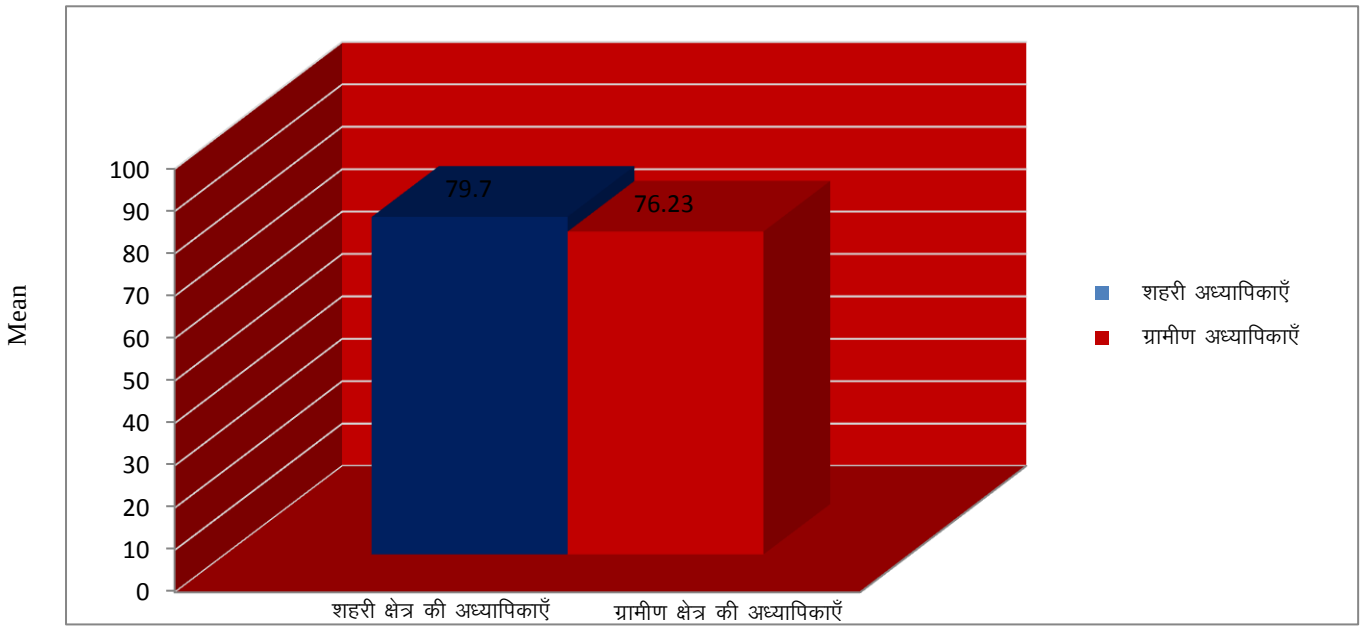

माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों के तुलनात्मक।

सारणी क्रंमाक –4.1

अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों पर आधारित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 79. 7 तथा 76.23 प्राप्त हुए एवं मानक विचलन क्रमशः 6.15 व 6.80 प्राप्त हुए 't' का मान के सारणीयन मान स्वतंत्रता के अंश 58 पर क्रमशः 0.05 स्तर पर 2.00 तथा 0.01 स्तर पर 2. 66 हैं। सांख्यिकी आधार पर गणना करने पर 'टी' का मान 2.07 प्राप्त हुआ जो 'T' के मान के 0.01 स्तर के सारणीगत मान से ज्यादा है अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है लेकिन 0.05 स्तर के सारणीगत मान कम है तो परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :– अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियां अधिक पाई गई वहीं शहरी क्षेत्र की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियां देखने को तो मिली लेकिन नगण्य रूप से।

परिकल्पना संख्या 2

माध्यमिक स्तर के शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता।

सारणी संख्या 4.2

समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमापविचलन (σ)	टी मान (t)	सार्थकता का स्तर
शहरी सरकारी विद्यालय	15	81.2	9.80	0.98	स्वीकृत
शहरी निजी विद्यालय	15	78.2	6.54		

df = (N_1+N_2 – 2) (15+15 – 2 =28) 0.05=2.05 एवं 0.01=2.76

मध्यमान – ग्राफ संख्या – 4.2

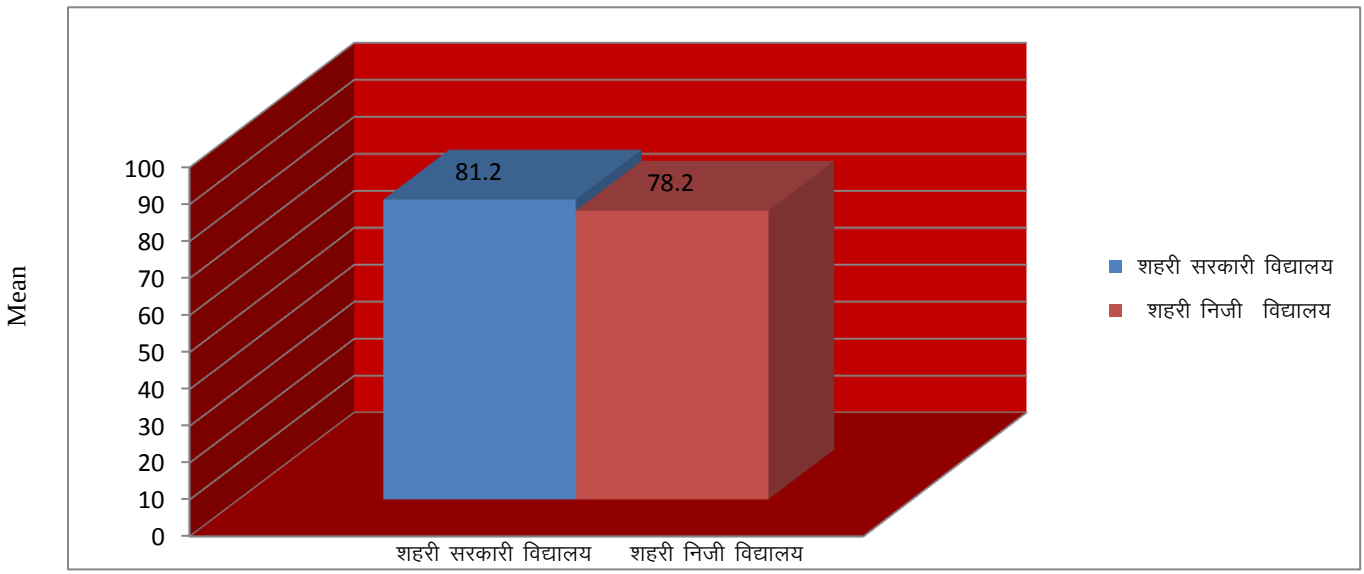

माध्यमिक स्तर के शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों के तुलनात्मक।

सारणी क्रंमाक – 4.2

अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों पर आधारित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 81.2 तथा 78.2 प्राप्त हुए एवं मानक विचलन क्रमशः 9.80 व 6.54 प्राप्त हुए 'टी' का मान के सारणीगत मान स्वतंत्रता के अंश 28 पर क्रमशः 0.05 स्तर पर 2.05 तथा 0.01 स्तर पर 2.76 हैं। सांख्यिकी आधार पर गणना करने पर 'टी' का मान 0.98 प्राप्त हुआ जो 't' मान के प्राप्त 0.01 स्तर व 0.05 स्तर अर्थात् दोनो स्तर से कम है अतः अपेक्षित मान कम हो हो तो परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :– निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि परिकल्पना 2 के अनुसार शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया और परिकल्पना स्वीकृत की गई।

परिकल्पना संख्या 3

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता।

सारणी संख्या 4.3

समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमापविचलन (σ)	टी मान (t)	सार्थकता का स्तर	
ग्रामीण सरकारी विद्यालय	15	78.26	7.31	2.70	0.05 स्वीकृत	0.01 अस्वीकृत
ग्रामीण निजी विद्यालय	15	72.26	4.55			

df = (N_1+N_2 – 2) (15+15 – 2 =28) 0.05=2.05 एवं 0.01=2.76

मध्यमान – ग्राफ संख्या – 4.3

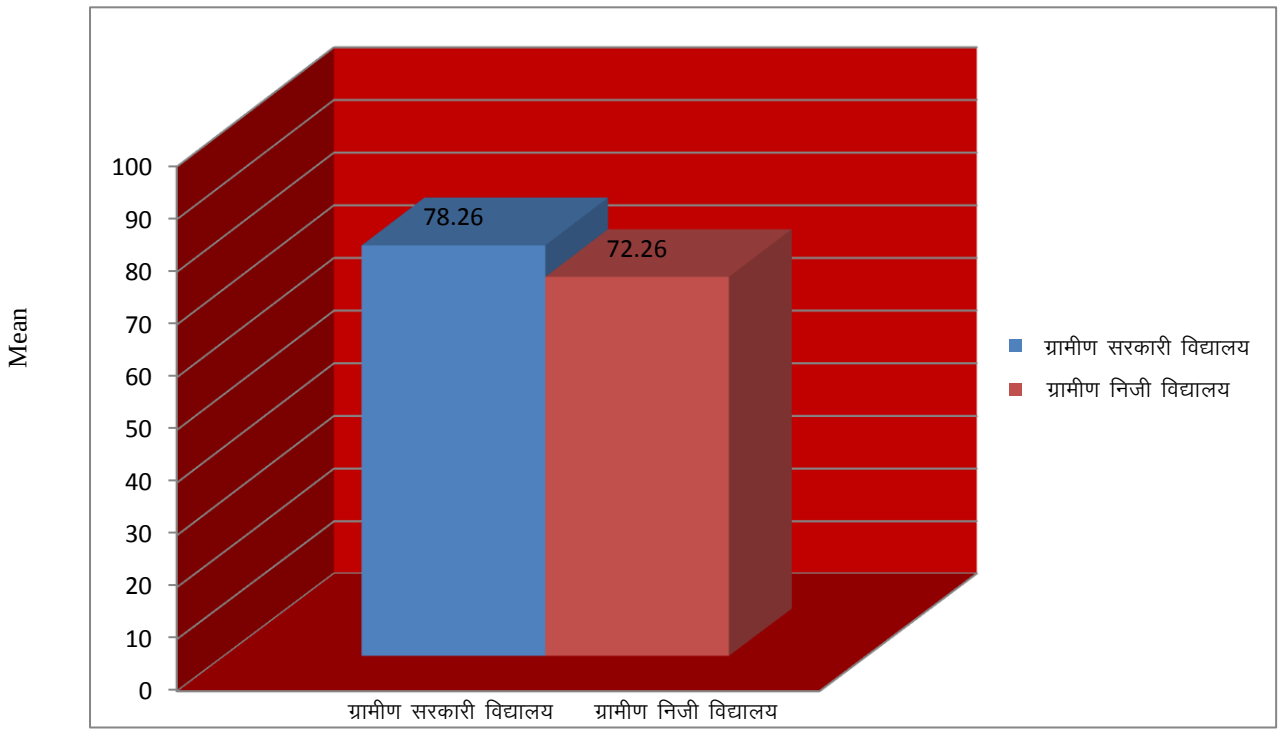

माध्यमिक स्तर के ग्रामीण सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों के तुलनात्मक।

सारणी क्रंमाक –4.3

अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के ग्रामीण सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों पर आधारित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 78.26 तथा 72.26 प्राप्त हुए एवं मानक विचलन क्रमशः 7.31 व 4.55 प्राप्त हुए 'टी' मान के सारणीगत मान स्वतंत्रता के अंश 28 पर क्रमशः 0.05 स्तर पर 2.05 तथा 0.01 स्तर पर 2.76 हैं। सांख्यिकी आधार पर गणना करने पर 'टी' का मान 2.70 प्राप्त हुआ जो 't' मान के 0.01 स्तर के सारणीगत मान से अधिक है अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। लेकिन 0.05 स्तर के सारणीगत मान कम है तो परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं।

निष्कर्ष :– अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि ग्रामीण सरकारी अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियां अधिक पाई गई वही निजी विद्यालय की अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियां देखने को तो मिली लेकिन नगण्य रूप से।

परिकल्पना संख्या 4

माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता।

सारणी संख्या 4.4

समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमापविचलन (σ)	टी मान (t)	सार्थकता का स्तर
शहरी सरकारी विद्यालय	15	81.2	9.80	0.93	स्वीकृत
ग्रामीण सरकारी विद्यालय	15	78.26	7.31		

df = (N_1+N_2 – 2) (15+15 – 2 =28) 0.05=2.05 एवं 0.01=2.76

मध्यमान – ग्राफ संख्या –4.4

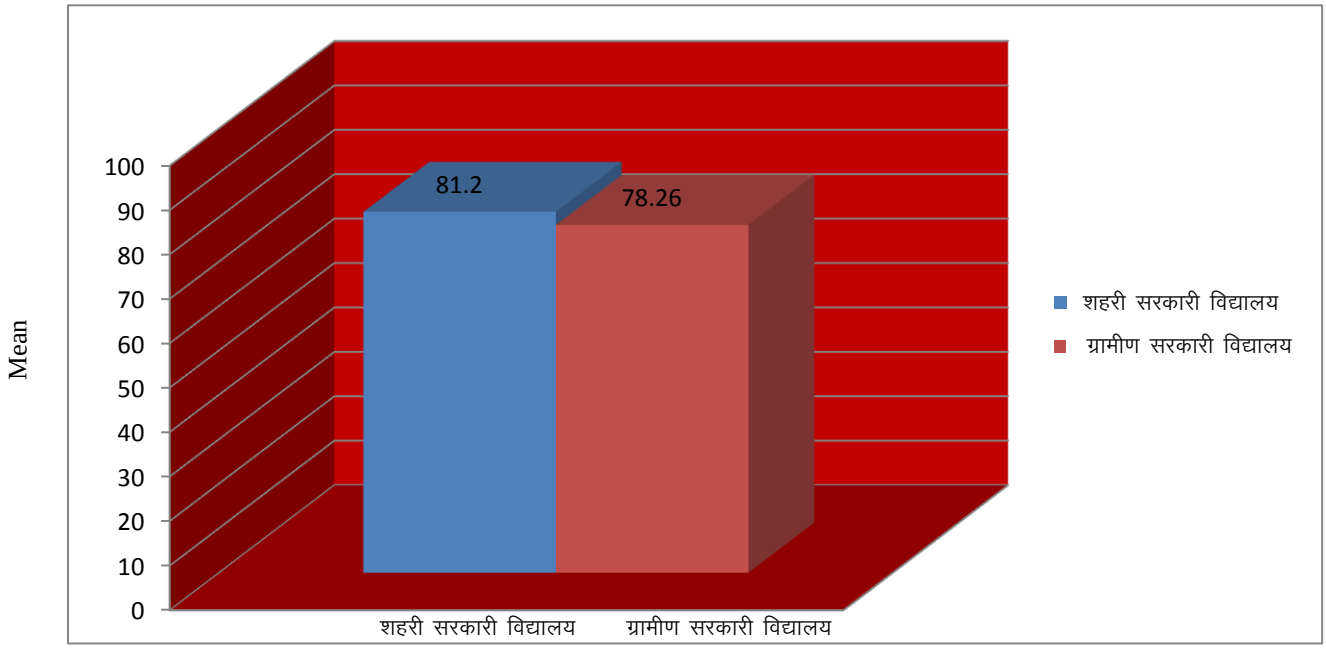

माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों के तुलनात्मक।

सारणी क्रंमाक 4.4

अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों पर आधारित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 81.2 तथा 78.26 प्राप्त हुए एवं मानक विचलन क्रमशः 9.80 व 7.31 प्राप्त हुए 't' मान के सारणीगत मान स्वतंत्रता के अंश 28 पर क्रमशः 0.05 स्तर पर 2.05 तथा 0.01 स्तर पर 2.76 हैं। सांख्यिकी आधार पर गणना करने पर 'टी' का मान 0.93 प्राप्त हुआ जो 't' मान के 0.01 स्तर व 0.05 अर्थात् दोनों स्तर से कम है अतः अपेक्षित मान कम है तो परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं।

निष्कर्ष :– अतः कहा जा सकता है कि परिकल्पना 4 के अनुसार शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया और परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं।

परिकल्पना संख्या 5

माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता।

सारणी संख्या 4.5

समूह	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	प्रमापविचलन (σ)	टी मान (t)	सार्थकता का स्तर
शहरी निजी विद्यालय	15	78.2	6.54	2.89	अस्वीकृत
ग्रामीण निजी विद्यालय	15	72.26	4.55		

df = (N_1+N_2 – 2) (15+15 –2 =28) 0.05=2.05 एवं 0.01=2.76

मध्यमान ग्राफ संख्या – 4.5

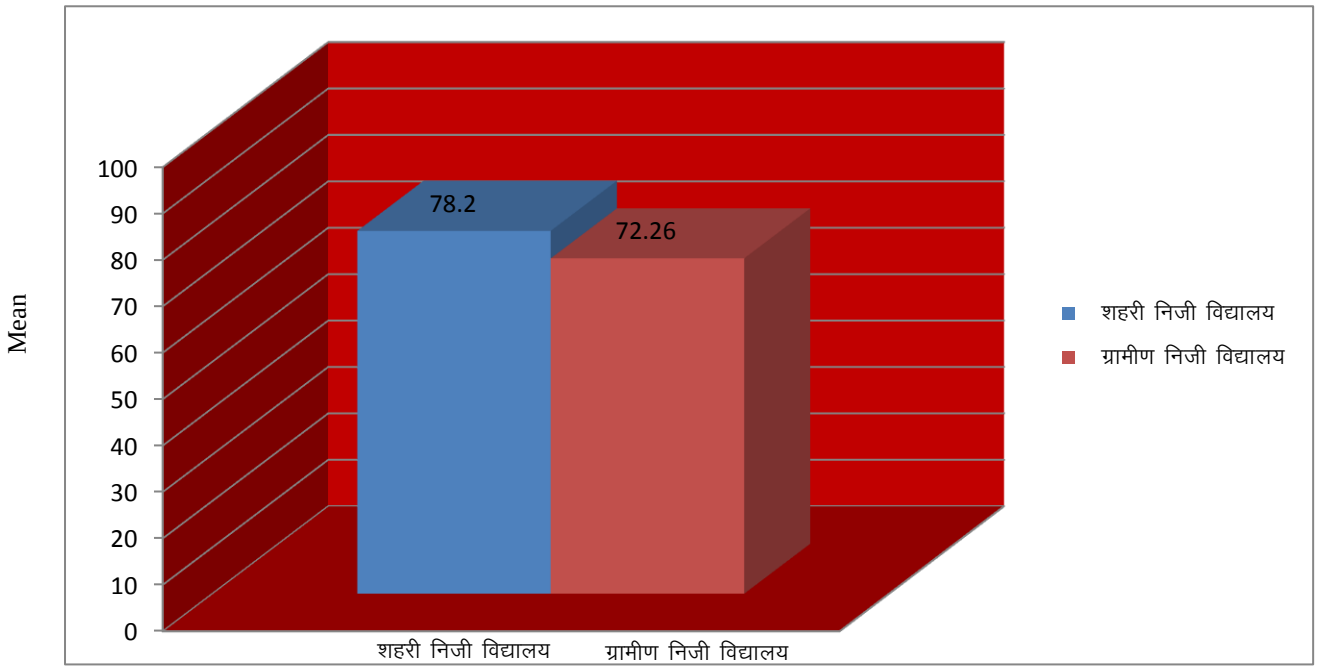

माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों के तुलनात्मक।

सारणी क्रंमाक – 4.5

अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों पर आधारित प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 78.2 तथा 72.26 प्राप्त हुए एवं मानक विचलन क्रमशः 6.54 व 4.55 प्राप्त हुए 't' मान के सारणीगत मान स्वतंत्रता के अंश 28 पर क्रमशः 0.05 स्तर पर 2.05 तथा 0.01 स्तर पर 2. 76 हैं। सांख्यिकी आधार पर गणना करने पर 'टी' मान 2.89 प्राप्त हुआ जो 't' मान के प्राप्त 0.01 स्तर व 0.05 स्तर अर्थात् दोनों स्तर से ज्यादा हो तो कम है तो परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

निष्कर्ष :– अतः कहा जा सकता है कि परिकल्पना 5 के अनुसार शहरी निजी व ग्रामीण निजी विद्यालय की अध्यापिकओं की कुण्ठा परिस्थितियों में सार्थक अन्तर पाया गया और परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

4.7 सांख्यिकी :–

प्रस्तुत लघुशोध के अनुसार कार्य के अन्तर्गत विभिन्न तथ्यों का विश्लेषण करके महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जा रहा। अनुसंधानकर्त्री को यह दत्त सामग्री नागौर जिले की माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत अध्यापिकाओं ग्रामीण एव शहरी की कुण्ठा परिस्थिति द्वारा पूर्ण की गई निर्धारण मापनी (प्रश्नावली) द्वारा प्राप्त हुई हैं।

पंचम अध्याय

शोध का सारांश एवं निष्कर्ष

5.1 प्रस्तावना :–

अध्ययन के धरातल में जितनी प्रशंसा अध्यापक की हुई है उतनी किसी की भी नहीं हुई थी। वैदिक ऋषियों ने अध्यापक को छात्र का मानक पिता कहा है। पूर्व और पश्चिम के देशों में भी इसका आदार किया गया हैं प्राचीन भारत में उसे प्रभु के समकक्ष 'गुरूब्रह्म' स्थान दिया गया है। गुरू और ईश्वर अगर साथ मिल जाये तो गुरू का प्रथम महत्व देना निम्नलिखित कबीर के शब्दों में निहित है।

''गुरू गोविन्द दोऊ, खड़े, काके लागू पांय,''।
''बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय''।।

पश्चिम में अध्यापक को ''राष्ट्र का उन्नायक'' संस्कृति का पोषक, मानव का कर्ता, इतिहास का निर्माता आदि माना गया है। अध्यापक वह माली है जो भाँति–भाँति के पौधों के समान बालकों को पोषण करके उनके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास को बल से आपूरित करता है। अध्यापक को शिक्षा के क्षेत्र में महान स्तम्भ रूप में स्वीकार किया गया है। अध्यापक का पद अत्यन्त महत्वपूर्ण है अतः यह निष्कर्ष मिलता है कि हर अध्यापक योग्य व्यक्ति हो। यह भी आवश्यक है कि जो व्यक्ति अध्यापक व्यवसाय में कार्यरत है वे मानसिक रूप से स्वस्थ रहे जिससे कि वे अपने कार्य का निष्पादन भली प्रकार से कर सके। यदि वे विभिन्न कारणों से कुण्ठित नहीं रहेंगे तो सीधा असर विद्यार्थियों और परोक्ष रूप से समाज पर पड़ेगा।

अध्यापक की परिभाषा :–

हमायूँ कबीर– ''अध्यापक वास्तविक रूप में राष्ट्र के सौभाग्य का निर्माता है।''

माध्यमिक शिक्षा आयोग :– ''प्रत्येक अध्यापक और अनुभवी शिक्षा इस बात से परिचित है कि शिक्षा क्रम तथा पाठ्यक्रम उस समय तक निर्जीव रहते है जब तक कि अध्यापक शिक्षा पद्धति के उचित ढ़ग को जीवन में परिचालित करके अपनाते नहीं है।

टिण्डल :–

स्कूल अध्यापक का व्यवसाय ही महान उच्चता का है स्वार्थपरता, अपूर्णता, विद्वेष, नैतिक पतन तथा चालाकी के दुर्गुणों से मुक्ति दिलाने वाला यदि कोई है तो वह स्कूल अध्यापक है जो अपनी सच्चाई और प्रतिष्ठा द्वारा उचित गुणों की व्याप्ति का संचालक बन जाता है।

एच.डी. वेल्स– ''अध्यापक इतिहास का वास्तविक निर्माता है''।

चीनी कहावत– ''एक वर्ष की योजना के लिए अनाज उगाओ एक दशक की योजना के लिए वृक्ष लगाओं, सदियों की योजना के लिए मानव का निर्माण करो''

ऋषि मुनि – माता की सेवा करने से बालक संसार को प्राप्त करता है। पिता की सेवा से वह संसार में जन्म लेता है और गुरू की सेवा करने से उसे ब्रह्म की उपाधि होती है।''

के.जी. सैयदन– ''यदि आप किसी देश की जनता को नापना चाहते है कि किसी समाज विशेष में किन मूल्यों को मान्यता दी जाती है तो इसका अच्छा तरीका यह है कि आप मालूम करें कि उस समाज में अध्यापकों का सामाजिक पद क्या है और कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है।''

सभी व्यक्तियों में सामान्यतया स्वभाश आगे बढ़ने और कुछ न कुछ पाने की तमन्ना रहती है। बहुत सी महत्वकांक्षाओ से वे घिरे रहते है। अपनी इच्छाओं और चाहतों को पूरा करने के लिए पूरी तरह सघंर्ष भी करते है। परन्तु अच्छी से अच्छी योजना बनाकरक कार्यपथ पर पूरे जारे–शोर से आगे बढ़ने पर कभी–कभी जैसा सोचा जाता है वैसी संतोषजनक उपलब्धि उन्हें नहीं मिल पाती।

कभी ऐसी भी स्थितियों से उन्हें गुजरना पड़ता है कि जैसे कि उन्हें अपनी प्रगति की राह में अंधेरा ही अंधेरा ही नजर आता है और आशा की कोई किरण नजर नहीं आती। ऊपर से अपने प्रयत्नों में लगातार मिलने वाली विफलता उन्हे उस स्थिति या हालात में लाकर खड़े कर देती है जिसे मनोविज्ञान की भाषा में नैराश्य तथा कुण्ठा की स्थिति से संबोधित किया जाता है। कुण्ठा से जुड़ी हुई यह स्थिति कैसी होती है इसे स्पष्ट करने के लिए हम अध्ययन करेगे।

कुण्ठा का अर्थ :–

जैम्स सी. को. लैमन के अनुसार जब हमारे अभिप्रेरको के मार्ग में किसी ऐसी रूकावट के कारण बाधा उत्पन्न होती है। जिसके फलस्वरूप वांछित लक्ष्य की प्राप्ती नहीं होती तब कुण्ठा उत्पन्न होती है। प्रत्येक व्यक्ति की विभिन्न आवश्यकताएँ तथा आंकाक्षएँ होती है। व्यक्ति उच्च स्तर का जीवन बिताने के लिऐ दिन–प्रतिदिन नये–नये लक्ष्यों का निर्माण करता है। जब इन लक्ष्यों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधा उत्पन्न तो कुण्ठा कहलाती है। कुण्ठा वह स्थिति है जो लक्ष्यों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के फलस्वरूप उन्पन्न होती हैं।

मनोवैज्ञानिक गार्डनर मार्फी ने कुण्ठा के बारे में लिखा है कि कुण्ठा वस्तुतः लक्ष्य प्राप्ति में बाधा है।

डी.वी. क्लार्डन के शब्दों में:–

''प्रयास की पूर्ति में बाधाएं कुण्ठा उत्पन्न करती है।''

मनोवैज्ञानिक डबल्यू. आर. मैक के अनुसारः–

''व्यक्ति को प्रभावित करने वाले कारणों में कुण्ठा महत्वपूर्ण है।''

कुण्ठा की परिभाषाओं से निम्न महत्वपूर्ण तथ्य हमारे सामने आते हैः–

(1) कुण्ठा वास्तव में मनोशारीरिक दशा है।

(2) यह दशा व्यवहार में कोई बाधा उपस्थित होने से उत्पन्न होती है।

(3) कुण्ठा के कारण व्यक्ति का व्यवहार सामन्य स्थिति से भिन्न होती है।

कुण्ठा के प्रकार :–

व्यक्ति सदैव वातावरण से प्रभावित होता है। यदि वातावरण व्यक्ति के अनुकूल है तो व्यक्ति समायोजन कर लेगा अन्यथा समायोजन अच्छा नहीं होगा। वातावरण के अभाव में व्यक्ति मन में कुण्ठा उत्पन्न होती है।

1. आन्तरिक कुण्ठा :–

आन्तरिक कुण्ठा उस बाधा का परिणाम होती है जो स्वयं व्यक्ति में होती है। उदाहरणार्थ – भय, जो व्यक्ति अथवा लक्ष्य प्राप्त कने में रोकता है या शारीरिक मानसिक अथवा संवेगात्मक अभाव की स्थिति।

2. बाह्य कुण्ठा :–

उन परिस्थितियो का परिणाम होती है जिसमे कोई बाह्य बाधा व्यक्ति को अपना लक्ष्य प्राप्त करने से रोकती है। उदाहरणार्थ – भौतिक बाधाओं, नियमों कानूनों या दूसरों के अधिकारों या इच्छाओं का परिणाम बाह्य कुण्ठा हो सकती है।

कुण्ठा के फलस्वरूप प्रतिक्रियाएं :–

कुण्ठा का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर पड़ता है। कुण्ठा से व्यक्ति का हृदय और मस्तिष्क प्रभावित होते है। आज के युग में महिलाओं के व्यावसायिक कार्य करने में उन्हें विविध पारिवारिक, समाजिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। पुरूष प्रधान समाज में कई स्थानों पर महिलाओं को उनके दुर्व्यवहार को मजबूरन सहना पड़ता है जिसके परिणाम स्वरूप मानसिक आघात पहुँचता हैं

वुडवर्थ के अनुसार – कुण्ठा के फलस्वरूप चिन्ता, प्रत्यागमन, स्थिरीकरण, दमन आदि प्रमुख प्रतिक्रियाएँ होती है।

डॉ. शर्मा– कुण्ठा के प्रभावों के अन्तर्गत बैचेनी तथा तनाव चिन्ता तथा आक्रमण संवेगात्मक कष्ट तथा मन शारीरिक विकार, रूढ़िवृति, उदासीनता प्रतिक्रियाएँ बताई है।

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में अध्यापिकाओं की विद्यालय में कुण्ठित व्यक्तित्व के संदर्भ में अध्ययन किया गया हैं कुण्ठा की दशा में व्यक्ति के व्यवहार में निम्न परिवर्तन आ सकता है।

1. वह आक्रमणकारी बन जाता है।
2. वह आत्मसमर्पण कर देता है।
3. वह कुछ समय के लिये एकान्त वाला बन जाता है।
4. वह किसी रोग का अनुभव करता है।

जो व्यक्ति कुण्ठा का शिकार होता है। वह इन चारों प्रकार के व्यवहारों में से किसी प्रकार का व्यवहार करता है। पर यह आवश्यक नहीं है कि इन चारो प्रकार के व्यवहारों में किसी एक प्रकार का व्यवहार करने वाला कुण्ठा का शिकार है।

कुण्ठा परिस्थितियों के घटक

क्र.स.	घटक
1.	विद्यालय शिक्षण सबंधी परिस्थितियाँ
2.	विद्यालय उच्च परिस्थितियाँ
3.	सामाजिक/नैतिक परिस्थितियाँ
4.	पारिवारिक परिस्थितियाँ
5.	राजनैतिक परिस्थितियाँ

5.2 समस्या कथन :–

''नागौर जिले की माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं (ग्रामीण एवं शहरी) की कुण्ठा परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन''

5.3 शोध के उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियों को जानना।

2. माध्यमिक स्तर के शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियों को जानना।

3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियों को जानना।

4. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियों को जानना।

5. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी निजी विद्यालय की कार्यरत अध्यापिकाओं में कुण्ठा परिस्थितियों को जानना।

5.4 शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता ।

2. माध्यमिक स्तर के शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण सरकारी व निजी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

4. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है।

5. माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण निजी विद्यालय की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाता।

5.5 शोध विधि :–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि हैं।

5.6 न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध प्रबंधन में शोधकर्त्री द्वारा माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं सरकारी व निजी विद्यालयों की 60 अध्यापिकाओं को लिया गया हैं।

5.7 उपकरण :–

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री द्वारा कुण्ठा परिस्थिति मापनी स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया हैं।

5.8 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :–

शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया हैं।

1. मध्यमान –

सूत्र –

$$\overline{X} = \frac{\sum x}{N}$$

$\overline{X}$ = मध्यमान

$\sum X$ = पदों का योग

N = पदों की सख्या

2. प्रमाणिक विचलन

सूत्र – SD $= \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$

S.D. = मानक विचलन

Σd^2 = मध्यमान से प्राप्त विचलनों के वर्गो का योग

N = पदों की संख्या

3. 'टी' मान

सूत्र

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{(\sigma_1)^2}{N_1} + \frac{(\sigma_2)^2}{N_2}}}$$

M_1 = प्रथम समूह का विचलन

M_2 = द्वितीय समूह का विचलन

N_1 = प्रथम समूह की संख्या

N_2 = द्वितीय समूह की संख्या

$\sigma 1$ = प्रथम समूह का प्रमाणिक विचलन

$\sigma 2$ = द्वितीय समूह का प्रमाणिक विचलन

5.9 शोध के परिणाम एवं निष्कर्ष :–

प्रस्तुत लघुशोध में विश्लेषण के आधार पर अध्यापिका को एक महिला तथा अध्यापिका होने के नाते अपने व्यावसायिक क्षेत्र में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता हैं। इन कठिनाईयों में उसकी सामाजिक, पारिवारिक, नैतिक एवं आर्थिक व विद्यालय संबंधी आदि विभिन्न कठिनाईयां उसके सम्मुख उपस्थित होती है। इन अनेको कठिनाईयों के परिणामस्वरूप अध्यापिकओं को परेशानी, खीझ, चिन्ता के कारण कुण्ठित होना पड़ता है तथा कुण्ठा के परिणामस्वरूप यह किस मानसिक एवं भावना की दृष्टि से किस सीमा तक प्रभावित होती है, और वह कुण्ठा का किस रूप में सामना करती है, इन्ही कठिनाईयों को मापने हेतु प्रस्तुत शोध कार्य किया गया। जिसके निम्नलिखित निष्कर्ष निकले। जिनका विवरण इस प्रकार है :–

सारणी 4.1 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 1 माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक नहीं पाया जाता। परिकल्पना स्वीकृत व अस्वीकृत होती है। दोनो समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी विद्यालयों में कार्यरत माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं के समूह के मध्यमान में ग्रामीण क्षेत्र की अध्यापिकाओं का कम पाया जाता है। लेकिन यह अन्तर सार्थक नहीं पाया गया।

सारणी 4.2 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 2 माध्यमिक स्तर के शहरी सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में कोई सार्थक नहीं पाया जाता। स्वीकृत होती है दोनो समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं के समूह का मध्यमान व सरकारी विद्यालय के मध्यमान में सार्थक अन्तर नहीं है अतः परिकल्पना स्वीकृत हैं।

सारणी 4.3 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 3 माध्यमिक स्तर के ग्रामीण सरकारी व निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में सरकारी अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियां अधिक पाई गई वही निजी विद्यालय की

अध्यापिकाओं में कम है अतः निष्कर्ष रूप में दोनों समूहों में नगण्य रूप से अन्तर है। तथा सार्थक अन्तर पाया जाता हैं।

सारणी 4.4 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 4 शहरी व ग्रामीण सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में सार्थक नहीं पाया जाता। परिकल्पना स्वीकृत होती है दोनो समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण व शहरी सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी 4.5 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 5 शहरी निजी व ग्रामीण निजी विद्यालय की कुण्ठा परिस्थितियों में सार्थक नहीं पाया जाता। परिकल्पना अस्वीकृत होती है दोनो समूहों के मध्यमानों को देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी निजी व ग्रामीण निजी विद्यालयों में कार्यरत माध्यमिक स्तर की अध्यापिकाओं से ज्यादा है अर्थात् शहरी व निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों है तथा सार्थक अन्तर पाया गया।

5.10 शैक्षिक निहितार्थ :–

कोई भी कार्य तभी सार्थक कहलाता है जब उसका कोई उपयोग हो। प्रस्तुत शोध कार्य नागौर जिलें में ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों पर कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों को जानने हेतु किया गया है। जिससे यह निष्कर्ष निकला कि विभिन्न परिस्थितियों में अध्यापिकाएं अलग–अलग स्तर पर प्रभावित होती है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि निष्कर्ष द्वारा ज्ञात कठिनाईयों व मानसिकता के साथ अपने शिक्षण कार्य को सम्पन्न कर सकें तथा समाज में स्वस्थ मानसिकता वाली पीढ़ी का निर्माण कर शिक्षा जगत में अपना व पूर्ण योगदान देनें में समर्थ हो सकें। अतः प्राप्त निष्कर्षो के शैक्षिक अनुप्रयोग निम्नलिखित हो सकते हैं।

1. इस अध्ययन द्वारा विद्यालय परिवेश में प्रधानाध्यापक, कार्यालय, कर्मचारियों की कुण्ठा परिस्थितियों का अध्ययन किया जा सकता हैं। अतः प्राप्त निष्कर्ष अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों को दूर करने के लिए सुझाव प्रस्तुत करते हैं।

2. प्रस्तुत शोध से प्राप्त निष्कर्ष सामान्य रूप से विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत महिलाओं की कुण्ठा परिस्थितियों को जानने व सुधार करने में सहायक सिद्ध होगें।

3. प्रस्तुत शोध माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों व अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों को जानने में सहायक सिद्ध होगे।

4. प्रस्तुत शोध निजी व सरकारी विद्यालयों के प्राथमिक विद्यालयों पर कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों को दूर करने के लिए प्रयास करेगें।

5. प्रस्तुत शोध अर्न्तमुखी व बर्हिमुखी व्यक्तित्व वाले अध्यापकों की कुण्ठा परिस्थितियों का सर्वेक्षण करने में सहायक सिद्ध होगें।

6. प्रस्तुत शोध माध्यमिक विद्यालयों के बालक–बालिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों में तुलनात्मक अध्ययन करने में सहायक होगा।

7. प्रस्तुत शोध प्राथमिक विद्यालयों पर कार्यरत व माध्यमिक विद्यालयों पर कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों का अध्ययन करने में सहायक सिद्ध होगा।

5.11 भावी शोध हेतु सुझाव :–

शोधकर्त्री ने अपने शोध में नागौर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं की कुण्ठा परिस्थितियों का अध्ययन किया है तथा दूर करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये हैं :–

1. अध्यापिकओं को उचित वातावरण प्रदान किया जाये जिन कमियों से वे अधिक कुण्ठित है उन्हें दूर करने के लिए प्रयास किये जायें।

2. कुण्ठित अध्यापिकाओं की मानसिक स्थिति को सुधारने व उनके विचारों में ही परिवर्तन करने का प्रयास करना चाहिए जिससे कुण्ठाएं कम हो।

3. ग्रामीण विद्यालयों की स्थिति में सुधार किया जाये, उनको अधिक सुविधाएं दी जाये जिससे ग्रामीण विद्यालयों की अध्यापिकाएं कुण्ठित न हो।

4. शहर से ग्राम व ग्राम शहर रोजाना आने जाने वाली अध्यापिकाओं के आने–जाने की सुविधा हेतु यातायात की सुव्यवस्था की जाये जिससे वे कुण्ठित न हो।

5. ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत अध्यापिकाओं हेतु आवास–निवास की व्यवस्था की जाये जिससे वे निश्चित होकर वहां रहे और कुण्ठित न हों।

6. विद्यालयों में पर्याप्त सहायक शिक्षण सामग्री की व्यवस्था होनी चाहिए।

7. विद्यालयों का भवन पर्याप्त हो जिससे छात्रों को पढ़ाने में असुविधा न हो।

8. प्रधानाध्यापिका सहायक अध्यापिकाओं के साथ सहयोग की भावना रखें जिससे कि व पाठ्य सहगामी क्रियाओं को विद्यालय में करवा सकें।

9. छात्र संबंधी कुण्ठाएं निजी विद्यालय में कार्यरत अध्यापिकाओं में अधिक है इसलिए छात्रों को प्रेरणा देनी चाहिए कि वे अध्यापकों का आदर करें व आपस में भी नैतिकतापूर्ण व्यवहार करें।

10. अध्यापिकाओं को वेतन समय पर दिया जाना चाहिए जिससे वे मानसिक रूप से तनावग्रस्त न हों।

11. अध्यापिकाओं को उनकी रूचि के अनुसार विषय देना चाहिए जिससे वे उस विषय को रूचि से व अच्छे तरीके से पढ़ा सकें।

12. विद्यालय प्रशासन में स्थानीय नेताओं का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

13. राजकीय एवं निजी विद्यालयों मे कार्यरत अध्यापिकाओं का वेतन समान होना चाहिए।

14. ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकाओं को ग्रामीण भत्ता अलग से दिया जाना चाहिए।

15. अभिभावकों को विद्यालय में प्रतिमाह सभा रखने का प्रावधान हो जिससे अध्यापिकाएं अभिभावकों को उनके बच्चों की पढ़ाई के बारे मे व अन्य जानकारियां दे सके।

16. अध्यापकों पर कार्यभार अधिकतम नहीं होना चाहिए तथा शिक्षण कार्य अध्यापिकाओं के अतिरिक्त अन्य कार्यो पर कम से कम लगाया जाये।

17. अध्यापकों को पदोन्नति शीघ्र हो तथा उसमें अनुचित रूप से लोग लाभ न उठायें।

18. अध्यापक आपस में छोटी–मोटी बातों पर मतभेद न करें अपितु समझौते से अपनी बात का फैसला करें जिससे झगड़े को प्रोत्साहन न मिलने और बच्चों पर इसका कुप्रभाव न पड़े।

5.12 उपसंहार :–

शोधार्थी द्वारा नागौर जिले की माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापिकओं (ग्रामीण एवं शहरी) की कुण्ठा परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन करने का एक प्रारम्भिक प्रयास है। शोधकर्त्री ने यह अनुभव किया कि वर्तमान में कार्यरत अध्यापिकाओं में अनेक कुण्ठा परिस्थितियाँ पाई जाती है तथा वे इन कुण्ठाओं से ग्रसित रहती है तथा अनेक समस्याओं

का सामना करती रहती हैं। इसलिए इसके प्रति अध्यापिकाओं के विचारों का विभिन्न पहलुओं से अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस हुई।

शोधार्थी ने इस शोध कार्य को करने मे अपनी योग्यता, समय, श्रम का यथा सम्भव प्रयोग किया है और सीमित अवधि में प्रस्तुत शोधकार्य को पूर्ण करने में मेहनत और लगन से जितना कार्य कर सकती थी, उतना श्रम करके कार्य सम्पन्न किया। कार्य को छोटे रूप में तथा समय की सीमितता में पूर्ण करने के कारण इसके परिणामों एवं निष्कर्षो की व्यापकता की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है, परन्तु भविष्य में इस विषय पर अधिक कार्य करने हेतु यह लघु शोध प्रबंध एक उपयुक्त भूमिका अदा कर सकता है।

यदि यह शोध प्रबंध अन्य शोधकर्ताओं या शोधकर्त्रीयों को इस क्षेत्र में कार्य करने हेतु प्रेरित कर सके एवं इसमें कार्यरत व्यक्तियों को प्रेरणा प्रदान कर सके तो अनुसंधानकर्त्री अपने कार्य एवं परिश्रम को सफल मानेगी। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा शोध सांराश, शोध निष्कर्ष, भावी शोध हेतु सुझावों का उल्लेख किया हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल जे.सी. : (1967), ''विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थय शिक्षा एवं संगठन'', आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

2. अग्रवाल जे.सी. : (1967), ''स्वतंत्र भारत में शिक्षा का विकास'', आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली

3. अरोड़ा रीता : (2006), ''शिक्षण अधिगम के मनोसामाजिक आधार'', शिक्षा प्रकाशन, जयपुर

4. भटनागर, डॉ. आर. पी. : (2003), ''शिक्षा अनुसंधान'', लॉयल बुक डिपो, मेरठ

5. चौबे. एस.पी. , अखिलेश : (2004–05), ''शैक्षिक मनोविज्ञान के मूल आधार'', इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ

6. गार्डनर मार्फी : (1947), ''पर्सनलिटी'', न्यूयॉर्क, हार्पर एण्ड ब्रदर्स

7. गैरट एच. ई. : (1949), ''साइकोलॉजी'', एन वाई अमेरिकन बुक कम्पनी

8. गुड एण्ड हैट : (1952), ''मैथड ऑफ सोशलन रिसर्च'', मैक ग्राहेल कम्पनी

9. कयाज्ञनिक : (1967), ''ट्रांसफर प्रोबलमस ऑफ द हैड ऑफ गवर्मेंट सैकण्डरी'', एस. टी. सी. स्कूल राजस्थान एम.एड. उदयपुर यूनिवर्सिटी।

10. किशोर पुरोहित : (1987) ''प्राथमिक अध्यापकों में कुण्ठा के कारणों का अनेक अर्न्तमुखी एवं बर्हिमुखी व्यक्तित्व के सदंर्भ में एक अध्ययन'', एम. एड. छात्र

11. माथुर टी. वी. : (1970) ''किशारों में कुण्ठा के कारण तथा उनका आकांक्षा स्तर संबंध'', पी. एच. डी. आगरा विश्वविद्यालय

12. पाण्डेय, रामशक्ल : (2001) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मंदिर आगरा

13. पण्डित के. एम. : (1973) ''मेधावी बालकों की समायोजन समस्याये एवं उनकी कुण्ठाऐं प्रतिक्रियाऐ'', पी. एच. डी., संभाजी विवि.

14 पारिक यू : ''बालकों में कुण्ठा प्रतिक्रियाए'' पी. एच. डी (शिक्षा) दिल्ली वि. वि.

15 रायजादा, बी. एस. : ''शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व'', राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर

16 शर्मा सी. एम. : (1961) ''ए स्टडी ऑफ रिएक्ट टू प्रसेटेशन अमंग द सुपर नॉर्मल, स नार्मल'', राज6 युनिवर्सिटी

17 शर्मा आर. ए : ''शैक्षिक अनुसंधान'', नई दिल्ली

18 सुखिया एवं मल्होत्रा : ''शैक्षिक अनुसंधान'', नई दिल्ली विकास पब्लिसिंग हाऊस –85

19 त्रिपाठी के. के : (1978) ''विद्यालय बालकों एवं किशोरों में कुण्ठाएं'', पी. एच. डी, गौरखपुर विश्वविद्यालय

20 थॉनडाईक ई. एल. : (1916) ''एज्यूकेशन साइकोलॉजी'', द ऑरिजनल नेचर ऑफ मेन, टीचर्स कॉलेज, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी

21 विद्योतमा श्रीमती : ''प्राथमिक शालाओं की अध्यापिकाओं की व्यक्तिगत सामाजिक समस्याओं पर किया गया अध्ययन''

22 वेस्ट जॉन डब्ल्यू : (1867) ''रिसर्च इन एज्यूकेशन'', यू. एस. ए. प्रेटिस हॉल इन्क इकल फिलिप्स

23 वाईटनी. एफ. एल. : (1954) ''ऐलीमेन्ट्स ऑफ एज्यूकेशन रिसर्च'', – न्यूयॉर्क प्रेटेसहाल

डिक्शनरी एण्ड इनसाईक्लोपीडिया

1. एन फोउर एण्ड एफ – डिक्शनरी ऑफ प्रीको एनोलिसि न्यू इयर साईक्लोजीकल लाईब्रेर – 1950

2. गुड सी बी – डिक्शनरी ऑफ एज्यूकेशन न्यूयॉर्क मैक ग्राहित कम्पनी 1960

जर्नल्स एवं पत्रिकाएँ –

1. Indian Education Review, Volume - 53 Numbe- 2

2. Edutrack Neelkamal Publication, Volume – 9 No. – 10 Hyderabad

Website :-

1. www.google.com

2. www.wikipedia.com

3. shodhganga.inflibuet.ac.in